بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

वर्ष- 11
अंक 3

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

25 रजब 1447 हिज्री कमरी, 15 सुलह 1405 हिज्री शम्सी, 15 जनवरी 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

اِنَّ الَّذِیۡنَ یُبَایِعُوۡنَکَ اِنَّمَا یُبَایِعُوۡنَ اللّٰہَ ؕ یَدُ اللّٰہِ فَوۡقَ اَیۡدِیۡہِمۡ ۚ فَمَنۡ نَّکَثَ فَاِنَّمَا یَنۡکُثُ عَلٰی نَفۡسِہٖ ۚ وَمَنۡ اَوۡفٰی بِمَا عٰہَدَ عَلَیۡہُ اللّٰہَ فَسَیُؤۡتِیۡہِ اَجۡرًا عَظِیۡمًا ﴿۱۱﴾

(سورۃالفتح:11)

अनुवाद : निश्चय ही जो लोग तुमसे बैअत करते हैं, वे वास्तव में अल्लाह ही से बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है। अतः जो कोई अपने वचन को तोड़ता है, वह अपने ही हित के विरुद्ध उसे तोड़ता है; और जो उस वचन को पूर्ण करता है, जिसे उसने अल्लाह से बाँधा है, तो अल्लाह निश्चय ही उसे अत्यन्त महान प्रतिफल प्रदान करेगा।

आने वाले मौऊद से बैअत करो, चाहे तुम्हें घुटनों के बल बर्फ़ पर घिसटते हुए जाना पड़े।

عَنۡ ثَوۡبَانَ قَالَ، قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ یَقۡتَتِلُ عِنۡدَ کَنۡزِکُمۡ ثَلَاثَۃٌ کُلُّھُمۡ ابۡنُ خَلِیۡفَۃٍ ثُمَّ لَا یَصِیۡرُ اِلٰی وَاحِدٍ مِنۡھُمۡ ثُمَّ تَطۡلُعُ الرَّایَاتُ السُّوۡدُ مِنۡ قِبَلِ الۡمَشۡرِقِ، فَیَقۡتُلُوۡنَکُمۡ قَتۡلًا لَمۡ یُقۡتَلۡہُ قَوۡمٌ ثُمَّ ذَکَرَ شَیۡئًا لَا أَحۡفَظُہٗ فَقَالَ فَاِذَا رَأَیۡتُمُوۡہُ فَبَایِعُوۡہُ وَلَوۡ حَبۡوًا عَلَی الثَّلۡجِ فَاِنَّہٗ خَلِیۡفَۃُ اللّٰہِ الۡمَھۡدِیُّ (ابن ماجہ کتاب الفتن باب خروج المہدی)

हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है, वे कहते हैं कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हारे एक ख़ज़ाने के पास तीन व्यक्ति आपस में युद्ध करेंगे, उनमें से प्रत्येक किसी न किसी ख़लीफ़ा का पुत्र होगा, फिर भी वह ख़ज़ाना उनमें से किसी के हाथ न आएगा। इसके बाद पूरब की ओर से काले झंडे प्रकट होंगे और वे तुम्हारा ऐसा संहार करेंगे जैसा इससे पहले किसी जाति ने नहीं किया होगा।" फिर आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ और बातें भी बयान फ़रमाईं जिन्हें मैं याद न रख सका। तत्पश्चात आपने फ़रमाया: "जब तुम उसे प्रकट होते देखो तो जाकर उससे बैअत कर लेना, चाहे तुम्हें घुटनों के बल बर्फ़ पर घिसटते हुए जाना पड़े, क्योंकि वही अल्लाह का ख़लीफ़ा महदी होगा।"

अहमदिया जमाअ त में बैअत की शर्तें

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

प्रथम : बैअत करने वाला सच्चे हृदय से इस बात का संकल्प करेगा कि भविष्य में, जब तक वह क़ब्र में प्रविष्ट न हो जाए, वह शिर्क से पूर्णतः बचा रहेगा।

द्वितीय : यह कि वह झूठ, व्यभिचार, कुदृष्टि, प्रत्येक प्रकार के पापाचार और दुराचार, अत्याचार, विश्वासघात, उपद्रव और विद्रोह के मार्गों से दूर रहेगा और आत्मिक आवेगों के समय भी उनका वशीभूत नहीं होगा, चाहे कैसा ही प्रबल आवेग क्यों न उपस्थित हो।

तृतीय : यह कि वह अल्लाह और उसके रसूल के आदेश के अनुसार बिना नागा पाँचों समय की नमाज़ अदा करता रहेगा और यथासंभव तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने, अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने तथा प्रतिदिन अपने पापों की क्षमा माँगने और इस्तिग़फ़ार करने में निरंतरता बनाए रखेगा। और हृदय की गहन श्रद्धा के साथ अल्लाह तआला के उपकारों को स्मरण कर उसकी स्तुति और प्रशंसा को अपना दैनिक अभ्यास बनाएगा।

चतुर्थ : यह कि वह सामान्यतः समस्त सृष्टि और विशेष रूप से मुसलमानों को अपने आत्मिक आवेगों के कारण किसी भी प्रकार की अनुचित पीड़ा नहीं पहुँचाएगा : न वाणी से, न हाथ से और न किसी अन्य प्रकार से।

पंचम : यह कि वह प्रत्येक अवस्था में : दुःख और सुख, कठिनाई और सुविधा, अनुग्रह और विपत्ति : अल्लाह तआला के प्रति निष्ठावान रहेगा और हर हाल में उसकी नियति पर संतुष्ट रहेगा, तथा उसकी राह में प्रत्येक अपमान और कष्ट को स्वीकार करने के लिए तत्पर रहेगा। किसी भी विपत्ति के आने पर उससे मुख नहीं मोड़ेगा, बल्कि आगे ही कदम बढ़ाएगा।

षष्ठ : यह कि वह रीति-रिवाजों के अंधानुकरण और मनोवासनाओं की परवशता को त्याग देगा और क़ुरआन-ए-करीम के शासन को पूर्णतः अपने ऊपर स्वीकार करेगा, तथा "क़ालल्लाह" और "क़ालर्रसूल" को अपने प्रत्येक मार्ग में आचरण का विधान बनाएगा।

सप्तम : यह कि वह घमंड और अहंकार को पूरी तरह त्याग देगा और नम्रता, दीनता, सदाचार, सहनशीलता और सरलता के साथ जीवन व्यतीत करेगा।

अष्टम : यह कि वह धर्म, धर्म की प्रतिष्ठा और इस्लाम के प्रति सहानुभूति को अपनी जान, अपने धन, अपनी मान-प्रतिष्ठा, अपनी संतान और अपने प्रत्येक प्रिय संबंध से बढ़कर प्रिय मानेगा।

नवम : यह कि वह समस्त मानवता के प्रति सहानुभूति में केवल अल्लाह के लिए संलग्न रहेगा और जहाँ तक उसकी सामर्थ्य हो, अल्लाह प्रदत्त शक्तियों और अनुग्रहों के द्वारा मानव जाति को लाभ पहुँचाएगा।

दशम : यह कि वह इस दीन सेवक के साथ केवल अल्लाह के लिए, भलाई के कार्यों में आज्ञाकारिता की प्रतिज्ञा के साथ, भ्रातृत्व का बंधन बाँधेगा और मृत्यु तक उस पर दृढ़ रहेगा, और इस भ्रातृत्व में ऐसा उच्च स्तर प्रदर्शित करेगा जिसकी मिसाल सांसारिक रिश्तों, संबंधों और समस्त सेवाभावपूर्ण अवस्थाओं में कहीं नहीं पाई जाती।

(इश्तिहार "तक्मील-ए-तब्लीग़", 12 जनवरी 1889 ई.) ★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

आसमानी दूध !

(संपादकीय)

सैय्यदना हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने इल्हाम के रूप में फ़रमाया:

"आकाश से बहुत सा दूध उतरा है, उसे सुरक्षित रखो।"

हुज़ूर अलैहिस्सलाम इसकी व्याख्या में फ़रमाते हैं कि इसका तात्पर्य मारिफ़त और सूक्ष्म ज्ञान के दूध से है। स्वप्नों की व्याख्या के ज्ञान में दूध से अभिप्राय ज्ञान और मारिफ़त होता है। इसी प्रकार दूध से अभिप्राय शुद्ध स्वभाव भी है। मेराज के प्रकटीकरण में वर्णित है कि हज़रत जिब्राईल ने आपके समक्ष तीन प्याले प्रस्तुत किए : एक पानी का, एक दूध का और एक मदिरा का। आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दूध लिया और उसे पी लिया। इस पर जिब्राईल ने कहा कि आपने शुद्ध स्वभाव को प्राप्त कर लिया।

(इब्न जरीर, हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हो से वर्णन, संदर्भ: तफ़सीर कबीर, तफ़सीर सूरह बनी इस्राईल)

इस आध्यात्मिक दूध को अल्लाह तआला ने "रहमत" शब्द से भी स्मरण किया है। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम हुआ:

या अहमदु फ़ाज़लतिर्रहमतु अला शफ़तैका कलामुन अफ़सिहत् मिन लदुन रब्बिन करीम। (तज़्किरा, पृष्ठ 558)

अर्थात् : हे अहमद! अल्लाह ने तेरे होंठों पर अपनी रहमत प्रवाहित कर दी है। तेरे वचन को परम उदार ख़ुदा की ओर से वाक्-प्रवीणता प्रदान की गई है।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी अनुपम रचना "ज़रूरतुल इमाम" में इमाम-ए-ज़माना की आध्यात्मिक शक्तियों का उल्लेख करते हुए फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के अनुग्रह से उसे इलाही ज्ञानों में पूर्णता प्रदान की जाती है और उसके युग में कोई दूसरा ऐसा नहीं होता जो क़ुरआनी मारिफ़तों के ज्ञान, उनके प्रसार की पूर्णता और सत्य को निर्णायक रूप से स्थापित करने में उसके समकक्ष हो। आगे फ़रमाते हैं कि जैसे मुर्गी अपने पंखों के नीचे अंडों को रखकर उनसे चूज़े निकालती है और फिर चूज़ों को अपने पंखों के नीचे रखकर अपनी विशेषता उन्हें प्रदान कर देती है, उसी प्रकार यह व्यक्ति अपने आध्यात्मिक ज्ञानों के माध्यम से सत्य को स्वीकार करने वालों को ज्ञान के रंग से रंगता रहता है और उन्हें विश्वास तथा मारिफ़त में निरंतर बढ़ाता चला जाता है

(ग्रंथ "ज़रूरतुल इमाम" के कथन का सार)

आदरणीय पाठको ! इसी से हम समझ सकते हैं कि इस युग में नबुव्वत की पद्धति पर स्थापित ख़िलाफ़त के माध्यम से जारी होने वाले उपदेशों और आदेशों का कितना महान मूल्य और महत्व है। अतः जब भी यह आध्यात्मिक दूध प्राप्त हो और वर्तमान ख़लीफ़ा के होंठों से प्रवाहित हो, तो उसे तुरंत सुनना और उसे अपने जीवन का अंग बना लेना हमारे लिए कितना आवश्यक है। इसलिए चाहे ये उपदेश अख़बार "बदर" के माध्यम से पहुँचे हों या एम.टी.ए. के द्वारा प्राप्त हुए हों, आदर का तक़ाज़ा यही है कि उन्हें शीघ्र सुना जाए, ध्यानपूर्वक सुना जाए और उन पर अमल करने की तौफ़ीक़ प्राप्त होने के लिए प्रार्थना भी की जाए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक अवसर पर फ़रमाया था

"ख़िलाफ़त का अर्थ ही यह है कि जिस समय ख़लीफ़ा के मुख से कोई शब्द निकले, उसी समय समस्त योजनाओं, समस्त प्रस्तावों और समस्त उपायों को त्याग दिया जाए और यह समझ लिया जाए कि अब वही योजना, वही प्रस्ताव और वही उपाय लाभकारी है, जिसका आदेश वर्तमान ख़लीफ़ा की ओर से प्राप्त हुआ है। और जब तक यह भावना जमाअत में उत्पन्न नहीं होती, उस समय तक समस्त भाषण व्यर्थ, समस्त योजनाएँ निरर्थक और समस्त उपाय असफल हैं।"

(जुमआ ख़ुत्बा, 24 जनवरी 1936 ई., प्रकाशित अल-फ़ज़ल 31 जनवरी 1936)

अल्हम्दुलिल्लाह, यह आध्यात्मिक दूध वर्तमान समय में अख़बार "बदर" के रूप में भी प्रत्येक सप्ताह भारत की जमाअत के सदस्यों के घरों तक उनकी-उनकी भाषाओं में पहुँचाया जा रहा है। यह एक आध्यात्मिक भोजन-विन्यास के समान होता है, जिसमें क़ुरआन और हदीस, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के साथ-साथ हज़रत अमीरुल मोमिनीन का नवीन जुमआ ख़ुत्बा भी सम्मिलित होता है। यद्यपि आप यह ख़ुत्बा एम.टी.ए. पर सुन चुके होते हैं, तथापि लिखित रूप में उपलब्ध सामग्री को पढ़ना, उसे समझना और दूसरों को समझाना अपेक्षाकृत अधिक सरल होता है।

अतः प्रचारकों, शिक्षकों और जमाअत के पदाधिकारियों के लिए, जिनका कर्तव्य है कि वे जमाअत के सदस्यों को हज़रत अमीरुल मोमिनीन के उपदेश समझाएँ, यह आवश्यक है कि वे पहले स्वयं लिखित उपदेश को गहराई से पढ़ें और फिर समझकर दूसरों को भी समझाएँ। "बदर" के अंक में हज़रत अमीरुल मोमिनीन के उपदेश विभिन्न रूपों में समझाए जाते हैं : जुमआ ख़ुत्बा, जुमआ ख़ुत्बे का सार, प्रश्नोत्तर शैली में जुमआ ख़ुत्बा तथा ऑनलाइन मुलाक़ातें, जिनमें विविध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर दिए जाते हैं।

अतः हमें चाहिए कि हम इस ख़ज़ाने का मूल्य समझें और उस धन को स्वीकार करने वाले बनें जिसे इमाम महदी अलैहिस्सलाम लुटाने आए हैं, और उन कृतघ्नों में सम्मिलित न हों जिनके बारे में आया है:

وَيَفِيْضُ الْمَالَ حَتّٰى لَا يَقْبَلَهُ أَحَدٌ

(इब्न माजह)

अर्थात् वह धन बाँटेगा, परंतु लोग उसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होंगे।

इसलिए विशेष रूप से प्रचारकों, शिक्षकों, जमाअत के पदाधिकारियों और जीवन समर्पित सेवकों के लिए आवश्यक है कि वे इस महान अनुग्रह का मूल्य समझें, स्वयं भी इसे ग्रहण करें और दूसरों को भी समझाने का प्रयास करें तथा प्रचार और प्रशिक्षण के क्षेत्र में इससे भरपूर सहायता प्राप्त करें।

और अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

अल्लाह के नाम के साथ उसकी राह में संघर्ष करो और उससे युद्ध करो जिसने अल्लाह का इन्कार किया है और छल-कपट से न लड़ो। बच्चों और स्त्रियों की हत्या मत करो और शत्रु से मुठभेड़ की कामना मत करो। निश्चय ही तुम नहीं जानते, संभव है कि इसी के द्वारा तुम्हारी परीक्षा ली जाए। अतः तुम यह प्रार्थना करो हे अल्लाह! तू हमें उनके मुक़ाबले में पर्याप्त हो जा, जैसा तू चाहे, और उनकी लड़ाई को हमसे दूर कर दे। फिर यदि उनका तुम्हारे साथ सामना हो जाए और वे एकत्र होकर शोर मचाएँ, तो तुम पर गरिमा और मौन धारण करना अनिवार्य है। आपस में झगड़ा मत करो, अन्यथा तुम कायर हो जाओगे और तुम्हारा प्रभाव तथा प्रताप नष्ट हो जाएगा। और तुम यह कहो हे अल्लाह! हम भी तेरे दास हैं और वे भी तेरे दास हैं। हमारी तथा उनकी दोनों की ललाट तेरी सत्ता के अधीन हैं और तू ही उनसे हमें पर्याप्त रूप से बचा सकता है। और यह जान लो कि स्वर्ग तलवारों की छाया के नीचे है। (हदीस)

काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की घटना कितनी शिक्षाप्रद है। यह स्मरण रखना चाहिए कि व्यवस्था अलग वस्तु है और कार्य करना अलग। व्यवस्था बनाए रखने के लिए जो कोई भी त्रुटि करता है, उससे अवश्य पूछा जाता है, चाहे वह कोई भी हो। अतः अल्लाह के आदेश के अधीन धर्म के लिए ऐसे प्रयास करो कि शैतान दूर हो जाए, किंतु यह कभी न करो कि तुम्हारी प्रशंसा की जाए। और कार्य करके यह मत समझो कि हमारी भूलों पर हमसे पूछताछ नहीं होगी। फिर अल्लाह पर उपकार मत जताओ। उपकार-बोध और कष्ट पहुँचाने के भाव से काम मत लो। सभी साधनों से इस्लाम की सेवा करो। (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

तबूक की यात्रा इतनी बुद्धिमत्तापूर्ण और बरकतों से परिपूर्ण सिद्ध हुई कि समूचे अरब क्षेत्र में मुसलमानों का प्रभाव स्थापित हो गया और थोड़े ही समय में पूरे अरब में इस्लाम का ध्वज लहराने लगा।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अंतिम अभियान तबूक का अभियान था, और अंतिम सेना अथवा दस्ता जिसे आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भेजा, वह उसामा की सेना थी।

हे लोगो! तुम में से कुछ लोगों की बातें उसामा को सेनापति बनाए जाने के विषय में मुझ तक पहुँची हैं। यदि तुमने मेरे द्वारा उसामा को सेनापति नियुक्त करने पर आपत्ति की है, तो इससे पहले उसके पिता को मेरा सेनापति ठहराने पर भी तुम आपत्ति कर चुके हो। अल्लाह की शपथ! वह भी सेनापति होने के योग्य था और उसके बाद उसका पुत्र भी सेनापति होने के योग्य है। वह उन लोगों में से था जो मुझे सबसे अधिक प्रिय थे, और निश्चय ही ये दोनों ऐसे हैं जिनके विषय में हर प्रकार की भलाई और सद्गुण की अपेक्षा की जा सकती है। अतः इस उसामा के लिए भलाई की सीख को दृढ़ता से थामे रखो, क्योंकि यह तुम में से श्रेष्ठ लोगों में है। (हदीस)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: उस सत्ता की शपथ जिसके अधिकार में मेरा प्राण है! यदि मुझे यह भी निश्चित हो जाए कि हिंस्र पशु मुझे उठा ले जाएँगे, तब भी मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेश के अनुसार उसामा की सेना को अवश्य भेजूँगा। जो निर्णय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किया है, मैं उसे निरस्त नहीं कर सकता। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से इतनी आत्मीयता थी कि जिस ध्वज पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं अपने हाथ से गाँठ बाँधी थी, उसके विषय में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा था कि यह कैसे संभव हो सकता है कि इब्न अबू क़ुहाफ़ा उस ध्वज की गाँठ खोल दे, जिसे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं अपने हाथ से बाँधा है।

श्रीमान अज़ीज़ुर्रहमान ख़ालिद साहब, मुरब्बी सिलसिला (अमेरिका) तथा श्रीमान एदी हाम्यादी साहब (इंडोनेशिया) के निधन पर उनका स्मरण-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब।

तबूक के अभियान और कुछ अन्य सैन्य टुकड़ियों के संदर्भ में सीरत-ए-नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पावन एवं विशुद्ध वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 05 दिसम्बर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बे में हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु और कुछ अन्य सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के ग़ज़वा-ए-तबूक में पीछे रह जाने और उस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की अप्रसन्नता का उल्लेख हुआ था। इस विषय में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी उल्लेख किया है और इसी संदर्भ में जमाअत को नसीहत भी फ़रमाई है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि:

"अहादीस में आता है कि इस युद्ध में तीन मोमिन भी सम्मिलित नहीं हुए थे। उनमें से एक का विस्तृत वर्णन अहादीस में मिलता है। वह फ़रमाते हैं," अर्थात वह सहाबी, "कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वापसी के बाद मैं आपकी सेवा में पहुँचा तो मैंने लोगों से पूछा कि बताओ, पीछे रह जाने वाले और भी कोई आए हैं या नहीं, और उन्होंने किस प्रकार क्षमा-याचना की, तथा उनके साथ कैसा व्यवहार किया गया? लोगों ने बताया कि लोग आते ही बहाने प्रस्तुत करते हैं और कहते हैं कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हमारे लिए क्षमा की दुआ कर दीजिए, तो आप उनके लिए दुआ कर देते हैं।" वह, अर्थात यह सहाबी हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु, कहते हैं कि "मेरे मन में विचार आया कि मैं भी कोई बहाना बना लूँ और डाँट-फटकार से बच जाऊँ, परंतु फिर मुझे एक और विचार आया। मैंने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से पूछा कि कौन-कौन लोग आ चुके हैं? उन्होंने नाम बताए, तो वे सब मुनाफ़िक़ थे। केवल दो मोमिनों का नाम लिया और बताया कि उन्होंने कोई बहाना नहीं किया, बल्कि अपनी गलती का स्वीकार कर लिया है। तब मैंने अपने दिल में कहा कि मैं मुनाफ़िक़ों के साथ क्यों शामिल होऊँ? ऐसे बहाने प्रस्तुत करने के बजाय, जो वास्तव में बहाने कहलाने योग्य भी नहीं हैं, बेहतर यही है कि साफ़-साफ़ कह दूँ कि मुझसे गलती हो गई है, और आप जो चाहें मेरे साथ व्यवहार करें। अतः यह विचार आते ही मैंने अपने अपराध को स्वीकार करने का निश्चय कर लिया, और इस प्रकार अल्लाह तआला ने मुझे मुनाफ़िक़ों के साथ शामिल होने से बचा लिया। फिर मैं गया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से स्पष्ट रूप से कह दिया कि मेरी ही आलस्य और असावधानी थी कि मैं ग़ज़वे में सम्मिलित नहीं हो सका, अन्यथा कोई वास्तविक कारण नहीं था। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तक अल्लाह तआला का आदेश तुम्हारे विषय में न आ जाए, तुमसे सामाजिक संबंध समाप्त रखे जाएँगे।" इस सहाबी का नाम काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु था। वे

बयान करते हैं कि इस आदेश से हमें अत्यंत कष्ट पहुँचा, क्योंकि मदीना में सभी मुसलमान ही थे, और जो मुनाफ़िक़ थे, उनमें से भी किसी को साहस नहीं था कि उनसे बातचीत करे।

यह सारी बात मैंने संक्षेप में ही बयान की है। विस्तार पिछले ख़ुत्बे में वर्णित कर चुका हूँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुत्बे में यह विवरण फ़रमाया था और फिर इसी संदर्भ में, जैसा कि मैंने कहा, जमाअत को नसीहत भी की थी। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि : "यहाँ तो मैंने देखा है," अर्थात क़ादियान में यह 1936 ईस्वी की बात है "कि जिन लोगों से बातचीत करने से मना किया जाता है," अर्थात जिन्हें दंड दिया जाता है, "वे मुहल्लों में अहमदियों के घरों तक भी चले जाते हैं। मुहल्ले वाले न जाने कैसे सोए रहते हैं कि उन्हें पता ही नहीं चलता। यहाँ के कुछ अहमदी साँपों को पालते हैं, परंतु उन्हें याद रखना चाहिए कि ये साँप न तो ख़ुदा को डस सकते हैं, न उसके रसूल को और न ही ख़लीफ़ा को। ये उन्हीं को डसेंगे जो इन्हें पालते हैं। हम तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से सुरक्षित हैं, क्योंकि जिसे अल्लाह तआला अपनी सुरक्षा में ले ले, उसे कौन डस सकता है। ये उन्हीं को डसेंगे जिन्हें वे डस सकते हैं, और अफ़सोस कि लोग देखते हुए भी इन साँपों की हरकतों पर अनदेखी से काम लेते हैं।"

उस समय कुछ फ़ितने उठ खड़े हुए थे, जिनके कारण आपको यह कहना पड़ा था। आप आगे फ़रमाते हैं कि : "अर्थात् मदीना में कोई मुनाफ़िक़ भी उनसे बातचीत नहीं कर सकता था।" काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि इस आदेश के कुछ दिनों बाद यह ज्ञात हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उनकी पत्नियाँ और बच्चे भी उनसे अलग हो जाएँ। हम तीनों में से एक सहाबी वृद्ध थे। उनकी पत्नी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में गई और निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! मेरे पति तो पहले ही टूट चुके हैं। न वे ठीक से भोजन करते हैं और न सोते हैं। फिर वृद्धावस्था के कारण हर समय सहायता के मोहताज रहते हैं। पति-पत्नी के संबंधों के योग्य तो वे पहले ही नहीं रहे, यदि आप अनुमति दें तो मैं उनके खाने-पीने आदि में सहायता करूँ। आपने फ़रमाया कि अच्छा, इतनी अनुमति है। इस पर हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मुझे विचार आया कि मैं भी अपने लिए ऐसी अनुमति प्राप्त करने की व्यवस्था कर लूँ, किंतु फिर यह विचार आया कि वह वृद्ध हैं और मैं युवा हूँ, मेरे लिए ऐसा करना उचित नहीं। इस पर मैंने अपनी पत्नी से कहा कि तुम अपने मायके चली जाओ, ऐसा न हो कि मैं तुम्हें बुलाऊँ और तुम उत्तर दे दो। मुझे किसी और के विषय में तो यह भी विचार न था कि वह मुझसे बातचीत करेगा। हाँ, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत और शफ़क़त के कारण यह आशा रहती थी कि मेरे कष्ट को देखकर आपको अवश्य दया आएगी। इसलिए मैं आपकी सभा में जाता और ऊँचे स्वर में अस्सलामो अलैकुम कहता और फिर देखता कि आपके होंठ हिलते हैं या नहीं, परंतु आप उत्तर न देते। मैं घबराहट में उठकर चला आता और यह सोचता कि शायद आपके होंठ हिले होंगे, पर मैं देख न सका। इसलिए उस समय सभा से उठकर चला जाता, फिर लौटकर आकर ऊँचे स्वर में अस्सलामो अलैकुम कहता और फिर होंठों की ओर देखता, और फिर उठ आता। फिर जाता, पर आप उत्तर न देते। हाँ, कभी-कभी आँखों के कोने से मेरी ओर देख लेते। वे कहते हैं कि जब बहुत दिन बीत गए तो मैं अपने चचेरे भाई के पास गया, जिनके साथ मैं हमेशा खाता-पीता और उठता-बैठता था। वह अपने बाग़ में काम कर रहा था। मैंने उससे कहा कि ऐ भाई! तू मेरा राज़दार है। हम दोनों सदा साथ रहे हैं और हमारी कोई बात एक-दूसरे से छिपी नहीं। तुझे भली-भाँति ज्ञात है कि मैं एक निष्ठावान मुसलमान हूँ और मुझमें निफ़ाक़ की कोई रग नहीं। मैं आज घबराहट की अवस्था में तुझसे पूछने आया हूँ कि बता, क्या मैं मुनाफ़िक़ हूँ? पर उसने कोई उत्तर न दिया और केवल आकाश की ओर दृष्टि उठाकर देखा, जिसका अर्थ यह था कि अल्लाह तआला और उसका रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही बेहतर जानते हैं। वे कहते हैं कि जब ऐसे भाई ने, जो मेरा राज़दार था, मुझे यह उत्तर दिया तो मैंने अनुभव किया कि धरती मुझ पर तंग हो गई है। मैं घबराकर बाग़ की दीवार फाँदकर बाहर आ गया और उन्मत्त-सा नगर की ओर चल पड़ा। जब नगर के निकट पहुँचा तो एक व्यक्ति मेरे पास आया और पूछा कि क्या तुम फ़लाँ व्यक्ति हो? मैंने कहा, हाँ। तब उसने मुझे एक पत्र दिया और कहा कि यह फ़लाँ राजा ने भेजा है। वह एक अरब का ईसाई राजा था, जो रोमी शासन के अधीन था। मैंने पत्र खोलकर पढ़ा तो उसमें लिखा था कि हम जानते हैं कि तुम अरब के सरदार हो और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुम्हें अपमानित किया है, जबकि तुम्हारा सम्मान किया जाना चाहिए था। यदि तुम मेरे पास आ जाओ तो मैं तुम्हारे पद के अनुरूप तुम्हारे साथ व्यवहार करूँगा। काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मेरे भाई ने जो उत्तर मुझे दिया था : अर्थात् जब मैं चचेरे भाई के बाग़ में गया था : उससे मेरा हृदय पहले ही व्याकुल था, उस समय भी बेचैनी थी। उस पत्र को देखकर मुझ पर स्तब्धता छा गई और मैंने सोचा कि यह शैतान का अंतिम आक्रमण है; कहीं ऐसा न हो कि मेरे क़दम डगमगा जाएँ। तब मैंने उस दूत से कहा कि मेरे पीछे आओ। एक स्थान पर एक व्यक्ति भट्टी जला रहा था। मैंने उस पत्र को टुकड़े-टुकड़े करके उसमें : अग्नि में : डाल दिया और उससे कहा कि अपने राजा से कह देना कि इसका उत्तर यही है। ये उनके इम्तिहान और मुसीबत की अंतिम घड़ियाँ थीं। अंततः अल्लाह तआला ने रहम फ़रमाया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को आदेश दिया कि उनकी लुटि क्षमा कर दी जाए।

(उद्धृत: हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत, संदर्भित अहादीस)(ख़ुत्बात-ए-महमूद, खंड 17, पृष्ठ 655 से 658, इरशाद फ़रमाया: 9 अक्तूबर 1936 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु एक और स्थान पर फ़रमाते हैं कि : "काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु का प्रसंग कितना शिक्षाप्रद है। वे सभी ग़ज़वात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ रहे, मक्का की विजय में भी साथ थे, किंतु ग़ज़वा-ए-तबूक में आलस्य के कारण पीछे रह गए। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें इतनी कठोर दंड-व्यवस्था में रखा कि उनके सलाम का उत्तर तक न देते थे। समस्त मुसलमानों को उनसे बातचीत करने से रोक दिया गया, यहाँ तक कि पत्नी को भी उनसे अलग कर दिया गया। इसी अवस्था में ग़स्सान के राजा का दूत उनके पास एक पत्र लेकर आया, जिसमें लिखा था कि तुम्हारे स्वामी ने तुम्हारा सम्मान नहीं किया; तुम मेरे पास आ जाओ। उन्होंने यह कहते हुए कि यह शैतान का अंतिम आक्रमण है, उस पत्र को तंदूर में डाल दिया और दूत से कहा कि अपने राजा तक यह संदेश पहुँचा देना।" किंतु हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि : "आजकल के लोग हैं" : उस समय जमाअत की जो स्थिति थी : "कि यदि उनसे कुछ पूछताछ की जाए," अर्थात उत्तर-तलब किया जाए, "तो वे कहते हैं कि हमारी सेवाओं का ध्यान नहीं रखा गया, हमारी क़द्र नहीं की गई।"

याद रखना चाहिए कि व्यवस्था एक अलग वस्तु है और कार्य करना एक अलग वस्तु। और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए जो व्यक्ति लुटि करता है, उससे पूछताछ की जाती है, चाहे वह कोई भी हो। अतः अल्लाह तआला के आदेश के अधीन दीन के लिए ऐसी कोशिशें करो कि शैतान को भगा दो, किंतु यह कभी न करो कि तुम्हारी प्रशंसा की जाए; और कार्य करके यह न समझो कि हमारी लुटियों पर हमसे पूछताछ नहीं होगी। फिर अल्लाह तआला पर एहसान न जताओ। मन् और अज़ा से काम न लो। सभी साधनों से इस्लाम की सेवा करो।

(ख़ुत्बात-ए-महमूद, खंड 5, पृष्ठ 527–528, इरशाद फ़रमाया: 27 जुलाई 1917 ई.)

एहसान न जताओ, बल्कि सेवा करो : यही अल्लाह तआला को प्रसन्न करने की भावना होनी चाहिए। ये प्रारंभिक ख़िलाफ़त के ख़ुत्बों में से हैं। और जो पहला उद्धरण था, वह 1936 ई. का था।

ग़ज़वा-ए-तबूक की यात्रा इतनी ज्ञानपूर्ण और अत्यंत बरकतों से परिपूर्ण सिद्ध हुई कि समस्त अरब क्षेत्र में मुसलमानों की धाक बैठ गई और बहुत ही अल्प समय में पूरे अरब पर इस्लाम का ध्वज लहराने लगा।

अतः इस विषय में भी हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया है। आप फ़रमाते हैं कि : "तबूक से वापसी के बाद ताइफ़ के लोगों ने भी आकर आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली। पहले वे युद्ध कर रहे थे, फिर उन्होंने आज्ञाकारिता स्वीकार कर ली, और इसके बाद अरब के विविध क़बीले बारी-बारी से आकर इस्लामी शासन में सम्मिलित होने की अनुमति माँगने लगे, और थोड़े ही समय में पूरे अरब पर इस्लामी ध्वज लहराने लगा।"

(दीबाचा तफ़सीर-उल-क़ुरआन, अनवारुल-उलूम, खंड 20, पृष्ठ 363)

वापसी के बाद एक सरिया भी हुआ, जिसे सरिया-ए-हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु कहा जाता है, जो नज्रान में बनू अब्दुल-मदान की ओर भेजा गया था, जो बनू हारिस बिन काब में से थे। अब्दुल-मदान, जिसकी ओर क़बीले की निस्बत की गई है, बनू हारिस का जद्दे-अमजद था और उसका नाम अम्र बिन यज़ीद था। इब्न सअद की रिवायत के अनुसार यह सरिया रबीउल-अव्वल 10 हिज्री में घटित हुआ, जबकि इब्न हिशाम के अनुसार यह सरिया रबीउल-आख़िर या जमादीउल-ऊला 10 हिज्री में हुआ। 'सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम' में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हु ने 'बअस ख़ालिद बिन वलीद ब-तर्फ़ नज्रान' की तिथि रबीउल-अव्वल 10 हिज्री बयान की है।

(अत-तबक़ातुल-कुब्रा : इब्न सअद, खंड 2, पृष्ठ 128, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, 1990 ई.)(अस-सीरतुन-नबविय्या : इब्न हिशाम, पृष्ठ 861, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, 2001 ई.)(अस-सीरतुन-नबविय्या व अख़बारुल-ख़ुलफ़ा : इब्न हिब्बान, पृष्ठ 385–386, अल-कुतुब अस-सक़ाफ़िय्या, बेरूत, 1987 ई.)(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, पृष्ठ 833 : हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हु)

संक्षेप में इसका विवरण इस प्रकार है कि आपने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को आदेश दिया कि युद्ध से पहले तीन बार उन्हें इस्लाम की दावत दें, जिनकी ओर सरिया भेजा गया था। यदि वे स्वीकार कर लें तो उत्तम है, अन्यथा युद्ध किया जाए। अर्थात यदि वे युद्ध का प्रयास करें, तब भी तुम तीन बार उन्हें इस्लाम की शिक्षा की ओर आमंत्रित करना; और यदि फिर भी वे युद्ध पर अड़े रहें, तो उनसे युद्ध करो। अतः हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने ऐसा ही किया और वे सभी लोग मुसलमान हो गए। परिणामस्वरूप हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु वहीं ठहर गए; केवल तब्लीग़ हुई, युद्ध नहीं हुआ, और वे सब इस्लाम में प्रवेश कर गए। हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनमें निवास किया और उन्हें इस्लाम, किताबुल्लाह और नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत की शिक्षा देनी आरंभ की : और यही आदेश आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया था। इसके पश्चात हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में एक पत्र प्रेषित किया और उसमें लिखा :

"हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में, ख़ालिद बिन वलीद की ओर से : अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू। मैं उस अल्लाह तआला की प्रशंसा करता हूँ, जिसके सिवा कोई उपास्य नहीं। इसके पश्चात, हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! अल्लाह तआला आप पर रहमतें नाज़िल फ़रमाए। आपने मुझे बनू हारिस की ओर भेजा था और मुझे आदेश दिया था कि मैं तीन दिनों तक उन्हें इस्लाम की ओर आमंत्रित करूँ; फिर यदि वे इस्लाम स्वीकार कर लें तो मैं उनके बीच ठहरकर उन्हें इस्लामी आदेश, क़ुरआन-ए-करीम और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत सिखाऊँ; और यदि वे इस्लाम स्वीकार न करें तो मैं उनसे युद्ध करूँ।"

कुछ बातें विस्तार से वर्णित नहीं होतीं या अन्य स्थानों पर कुछ बातों से मिल जाती हैं, किंतु इस्लाम की शिक्षा यह नहीं है कि ज़बरदस्ती इस्लाम स्वीकार कराया जाए। यही आशय था कि उनसे कोई संधि न की जाए, या यदि वे फिर भी युद्ध करें तो उनसे युद्ध किया जाए : तुम्हें इसकी अनुमति है। अतः वह कहते हैं कि मैं उनके पास गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेशानुसार तीन दिनों तक उन्हें इस्लाम की ओर आमंत्रित किया, और उनके पास सवारों को भेजा कि ऐ बनू हारिस! इस्लाम स्वीकार कर लो, सुरक्षित रहोगे। परिणामस्वरूप लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया और युद्ध से विरत हो गए। जब तबलीग़ की गई तो उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। इस वाक्य से भी यह बात अत्यंत स्पष्ट हो जाती है कि वे युद्ध से रुक गए थे; उन्होंने युद्ध में पहल नहीं की थी। जब विरोधी ने पहल नहीं की, तो वे भी युद्ध करने नहीं गए थे। वे तो तबलीग़ के लिए गए थे, और वही उन्होंने की। फिर वे लिखते हैं कि अब मैं उनके बीच निवास कर रहा हूँ और उन्हें दीन के आदेश और निषेध तथा अहकाम बता रहा हूँ। आगे जो भी आदेश आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर से जारी होगा, उसके अनुसार मैं कार्य करूँगा। अस्सलामु अलैक या रसूलुल्लाह व रहमतुहू व बरकातुहू।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु के इस पत्र के उत्तर में फ़रमाया :

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम।

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर से ख़ालिद बिन वलीद को सलाम। मैं उस अल्लाह की प्रशंसा करता हूँ, जिसके सिवा कोई उपास्य नहीं। इसके बाद : तुम्हारा पत्र दूत के साथ हमारे पास पहुँचा, और यह ज्ञात हुआ कि बनू हारिस ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है और युद्ध से पहले 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' की गवाही दी है। यह अल्लाह की वही हिदायत है, जो उसने उन्हें प्रदान की। अतः तुम उन्हें अल्लाह के सवाब की शुभ-सूचना दो और अल्लाह के अज़ाब से डराओ, और स्वयं उनके कुछ लोगों को अपने साथ लेकर हमारे पास उपस्थित हो जाओ। अस्सलामु अलैक व रहमतुल्लाही व बरकातुहू।

हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस आदेश को देखकर बनू हारिस के कुछ व्यक्तियों को अपने साथ लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए। जिन लोगों को वे साथ लेकर आए, उनके नाम ये हैं : क़ैस बिन हुसैन, यज़ीद बिन अब्दुल-मदान, यज़ीद बिन मुहज्जल, अब्दुल्लाह बिन क़ुराद, शद्दाद बिन अब्दुल्लाह, अम्र बिन अब्दुल्लाह। जब ये लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, तो आपने उन्हें देखकर फ़रमाया : ये कौन लोग हैं? ऐसा प्रतीत होता है कि ये लोग हिन्दी हैं। निवेदन किया गया : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! ये लोग बनू हारिस में से हैं। इन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सलाम किया और कहा : हम गवाही देते हैं कि आप अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : मैं भी गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और निश्चय ही मैं उसका रसूल हूँ। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : क्या तुम वही लोग हो कि जब कभी अपने शत्रु से युद्ध करते हो तो उसे भगा देते हो? लोग मौन रहे; उनमें से कोई भी आगे न बढ़ा, अर्थात् किसी ने कुछ नहीं कहा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दूसरी बार यह बात दोहराई, फिर भी वे लोग मौन रहे। किसी ने उत्तर नहीं दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीसरी बार भी दोहराया, तब भी उनमें से कोई आगे न बढ़ा। यहाँ तक कि आपने चौथी बार फिर दोहराया कि जब कभी तुम शत्रु से युद्ध करते हो तो उसे भगा देते हो : अर्थात् यह तुम्हारी स्थिति थी कि तुम अपने आपको बहुत शक्तिशाली समझते थे। इस पर यज़ीद बिन अब्दुल-मदान ने निवेदन किया : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हाँ, हम वही लोग हैं कि जब किसी से युद्ध करते थे तो उसे भगा देते थे। उसने चार बार यही निवेदन किया कि हम बड़े योद्धा और साहसी लोग थे, किंतु यहाँ स्थिति उलट गई है। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : यदि ख़ालिद मुझे यह न लिखते कि तुम लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया है, तो मैं तुम्हारे सिर तुम्हारे पैरों तले कुचलवा देता। यज़ीद बिन अब्दुल-मदान ने निवेदन किया : हम न तो आपके और न ही ख़ालिद के आभारी हैं। वह नया-नया इस्लाम स्वीकार करने वाला था, इसलिए ऐसा कहा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तो फिर किसके आभारी हो? उन्होंने निवेदन किया : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हम अल्लाह के आभारी हैं, जिसने हमें आपके माध्यम से हिदायत प्रदान की। यह उसने बहुत उत्तम उत्तर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तुम सत्य कहते हो। फिर फ़रमाया : यह बताओ कि तुम लोग ज़माना-ए-जाहिलियत में किस कारण अपने विरोधी पर विजय प्राप्त करते थे? उन्होंने निवेदन किया : या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हम एकजुट होकर शत्रुओं से युद्ध करते थे। हम समझते थे कि यदि हम मिलकर युद्ध करेंगे तो निश्चय ही विजय हमारी होगी और हम पर कोई विजय प्राप्त नहीं कर सकेगा। जब इस्लाम आया और इस्लाम ने सभी क़बीलों को एक कर दिया, और विभिन्न क़बीले भी एक जान हो गए, तब उन्हें यह समझ आई कि ये लोग भी एकजुट हैं, और भलाई इसी में है कि हम उनसे युद्ध न करें, बल्कि न केवल युद्ध से रुक जाएँ, बल्कि इस्लाम भी स्वीकार कर लें, क्योंकि यही सच्चा धर्म है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़ैस बिन हुसैन को बनू हारिस का अमीर नियुक्त फ़रमाया, और शव्वाल के अंत में या ज़ुलक़ादा के आरंभ में इन लोगों को विदा किया। इन लोगों के अपनी क़ौम में पहुँचने के चार महीने बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इंतिक़ाल हो गया।

(अस-सीरतुन-नबविय्या, इब्न हिशाम, पृष्ठ 861 से 863, दारुल-कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, लेबनान, 2001 ई.)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अंतिम ग़ज़वा ग़ज़वा-ए-तबूक था, और अंतिम सेना या सरिया जिसे आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भेजा, वह लश्कर-ए-उसामा था। लश्कर-ए-उसामा का विस्तृत वर्णन उनके प्रसंग में तथा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के प्रसंग में पहले किया जा चुका है; तथापि संक्षेप में कुछ पृष्ठभूमि के साथ यहाँ उल्लेख कर देता हूँ।

बुख़ारी की रिवायत है। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लोगों को हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत की सूचना उस समय दे दी, जब लोगों के पास अभी उनसे संबंधित कोई समाचार नहीं पहुँचा था। इससे पहले, लश्कर-ए-उसामा से पूर्व एक लश्कर भेजा गया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ज़ैद ने झंडा संभाला और वे शहीद हो गए। फिर जाफ़र ने झंडा पकड़ा और वे भी शहीद हो गए। फिर इब्न रवाहा ने झंडा संभाला और वे भी शहीद हो गए। और आपकी आँखों से आँसू बह रहे थे। अंततः अल्लाह की तलवारों में से एक तलवार : ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु

: ने झंडा संभाला, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उनके हाथों उन विरोधियों पर विजय प्रदान की।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताबुल-मनाक़िब, बाब: मनाक़िब ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु, हदीस 3757, अनूदित, खंड 7, पृष्ठ 243)

हज्जतुल-विदा से वापसी पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जब मदीना मुनव्वरा पहुँचे, तो उस समय दक्षिण दिशा से मदीना वालों को किसी शत्रु का कोई भय शेष नहीं रहा था, किंतु उत्तर दिशा से अहले-रोम की ओर से अभी भी ख़तरा बना हुआ था, क्योंकि वे ईसाई अपनी शक्ति पर अभी तक अत्यधिक घमंड करते थे। इसलिए किसी भी समय उनकी ओर से आक्रमण हो सकता था। साथ ही, जंग-ए-मूता के शहीदों का प्रतिशोध भी शेष था, क्योंकि उस युद्ध में हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की कुशलता के कारण मुसलमानों का लश्कर सुरक्षित रूप से मदीना लौटने में सफल हुआ था।

हज्ज से फ़ारिग़ होने के बाद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मदीना तशरीफ़ लाए हुए अधिक दिन नहीं गुज़रे थे कि कुछ ही दिनों बाद आपने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु की सरदारी में एक लश्कर को शाम की ओर अभियान के लिए भेजने का आदेश दिया।

(हयात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, लेखक मुहम्मद हुसैन हैकल, अनुवाद: अबू अफ़ज़ल मुहम्मद ख़ान, पृष्ठ 597)

लश्कर-ए-उसामा की तैयारी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात से दो दिन पूर्व, दिन शनिवार को पूर्ण हुई, और इसकी शुरुआत आपकी बीमारी से पहले ही हो चुकी थी। आपने माह-ए-सफ़र के अंत में रोमियों से युद्ध की तैयारी का आदेश दिया। आपने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया और फ़रमाया: अपने पिता की शहादत-स्थल की ओर प्रस्थान करो। जहाँ पहली लड़ाई में हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद किए गए थे, वहीं जाओ और उन घोड़ों : अर्थात् शत्रुओं : को घोड़ों से रौंद डालो। मैंने तुम्हें इस लश्कर का अमीर नियुक्त किया है।

(फ़त्हुल-बारी, इब्न हजर, खंड 8, पृष्ठ 192, क़दीमी कुतुबख़ाना, मुक़ाबिल आराम बाग़, कराची)

एक अन्य रिवायत में आता है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: बलक़ा और दारूम को घोड़ों के द्वारा रौंद डालो। बलक़ा मुल्क-ए-शाम में स्थित एक क्षेत्र है, जो दमिश्क और वादी-उल-क़ुरा के बीच है। दारूम मिस्र जाते समय फ़िलस्तीन में ग़ज़्ज़ा के बाद एक स्थान है। और मुल्क-ए-शाम की ओर प्रस्थान का आदेश देते हुए फ़रमाया: फिर सुबह होते ही अहले-उब्ना पर आक्रमण करो। उब्ना मुल्क-ए-शाम में बलक़ा की ओर एक स्थान का नाम है। और फ़रमाया कि तीव्र गति से यात्रा करना, ताकि उन्हें सूचना मिलने से पहले ही तुम वहाँ पहुँच जाओ। फिर यदि अल्लाह तआला तुम्हें सफलता प्रदान करे, तो वहाँ ठहराव अल्प रखना, और अपने साथ मार्गदर्शक ले जाना, तथा सूचनाकारों और गुप्तचरों को अपने आगे भेज देना।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए अपने हाथ से एक झंडा बाँधा, फिर फ़रमाया:

अल्लाह के नाम के साथ उसकी राह में जिहाद करो और उससे युद्ध करो जिसने अल्लाह का इन्कार किया है। और धोखा न दो। बच्चों और स्त्रियों को क़त्ल न करो, और शत्रु से मुठभेड़ की कामना न करो।

यह वाक्य भी शत्रु के संभावित आक्रमण की ओर संकेत करता है कि यदि शत्रु आक्रमण करे तो सामना करना है, किंतु तुम स्वयं शत्रु से मुठभेड़ की कामना न करो। अतः फ़रमाया:

निश्चय ही तुम नहीं जानते, संभव है कि इसी कारण तुम्हारी परीक्षा ली जाए, किंतु तुम यह कहा करो कि ऐ अल्लाह! तू हमें उनके मुक़ाबले में काफ़ी हो जा, जैसा तू चाहे, और उनकी लड़ाई को हमसे दूर कर दे।

यह दुआ भी सिखाई गई कि युद्ध अनिवार्य नहीं है; यदि युद्ध टल सकता हो तो उसे टालो।

फिर यदि उनका तुम्हारे साथ आमना-सामना हो जाए और वे एकत्र होकर शोर मचाएँ, तो तुम्हारे लिए गरिमा और मौन आवश्यक है। किंतु यदि फिर भी युद्ध हो जाए, तो शांति और गरिमा के साथ युद्ध करो, और आपस में मत झगड़ो, अन्यथा तुम कायर हो जाओगे और तुम्हारा रोब व प्रभाव समाप्त हो जाएगा। अपने भीतर एकता उत्पन्न करो, और तुम यह कहो: ऐ अल्लाह! हम तेरे बंदे हैं और वे भी तेरे ही बंदे हैं। हमारी पेशानियाँ और उनकी पेशानियाँ तेरे अधिकार में हैं, और तू ही उनके मुक़ाबले में हमें काफ़ी हो सकता है। और यह जान लो कि जन्नत तलवारों की छाया के नीचे है।

हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हाथ से बँधा हुआ झंडा लेकर निकले और उसे हज़रत बुरैदा बिन हुसैब रज़ियल्लाहु अन्हु के सुपुर्द किया, और जुरुफ़ नामक स्थान पर लश्कर को एकत्र किया। जुरुफ़ मदीना से उत्तर दिशा में तीन मील की दूरी पर स्थित एक स्थान है। मुहाजिरीन और अंसार के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से कोई भी ऐसा न रहा जिसे इस अभियान के लिए न बुलाया गया हो। उनमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत सईद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत क़तादा बिन नुमान रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत सलमा बिन असलम रज़ियल्लाहु अन्हु सम्मिलित थे। इन सभी को हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के अधीन किया गया।

कुछ लोगों ने बातें करनी शुरू कर दीं और कहा कि यह लड़का प्रथम मुहाजिरों पर अमीर बनाया जा रहा है, जबकि इनमें बड़े-बड़े सहाबी उपस्थित हैं और उन पर एक युवक को अमीर नियुक्त कर दिया गया है। जब यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक पहुँची, तो आप इस पर अत्यंत क्रोधित हुए। उस समय आपने अपने सिर पर एक रूमाल बाँधा हुआ था और एक चादर ओढ़ी हुई थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मिम्बर पर चढ़े, अल्लाह की हम्द और स्तुति की, फिर फ़रमाया:

ऐ लोगो! तुम में से कुछ लोगों की बातें मुझे उसामा को अमीर बनाए जाने के विषय में पहुँची हैं। यदि तुमने मेरे उसामा को अमीर बनाने पर आपत्ति की है, तो इससे पहले तुम उसके पिता को अमीर नियुक्त किए जाने पर भी आपत्ति कर चुके हो। ख़ुदा की क़सम! वह भी अमीर बनाए जाने के योग्य था और उसके बाद उसका यह पुत्र भी अमीर बनाए जाने के योग्य है। वह उन लोगों में से था जो मुझे सबसे अधिक प्रिय थे और निश्चय ही ये दोनों ऐसे हैं जिनके बारे में हर प्रकार की भलाई और नेकी का विचार किया जा सकता है। अतः इस उसामा के लिए भलाई की नसीहत को अपनाओ, क्योंकि यह तुम में से श्रेष्ठ लोगों में से है।

जो मुसलमान हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ प्रस्थान करने वाले थे, वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को विदा कहकर जुरुफ़ के स्थान पर सेना में सम्मिलित होने के लिए चले जाते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बीमारी बढ़ती चली गई, किंतु आप लगातार इस बात पर ज़ोर देते रहे कि उसामा की सेना को अवश्य भेजा जाए, यह हर हाल में जाएगी। इतवार के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कष्ट और अधिक बढ़ गया। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु सेना से लौटे तो उस समय आप बेहोशी की अवस्था में थे। जब तकलीफ़ और बढ़ गई और हज़रत उसामा को इसकी सूचना मिली तो वे फिर लौट आए। उस दिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को औषधि पिलाई थी। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने सिर झुकाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का चुम्बन किया। आप बोल नहीं सकते थे, किंतु आप अपने दोनों हाथ आकाश की ओर उठाते और फिर उन्हें हज़रत उसामा के सिर पर रख देते थे। हज़रत उसामा कहते हैं कि मैं समझ गया कि आप मेरे लिए दुआ कर रहे हैं। इसके बाद हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु सेना की ओर वापस चले गए।

सोमवार के दिन हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु पुनः रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आए तो आपको कुछ होश आ गया था। आपने उसामा से फ़रमाया कि अल्लाह तआला की बरकत के साथ प्रस्थान करो। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से विदा होकर अपनी सेना की ओर चले गए और लोगों को कूच करने का आदेश दे दिया। अभी उन्होंने प्रस्थान का इरादा ही किया था कि हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की माता हज़रत उम्मे ऐमन की ओर से एक व्यक्ति यह संदेश लेकर आया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

सल्लम का अंतिम समय निकट दिखाई दे रहा है। इस पर हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास उपस्थित हुए और उनके साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तथा हज़रत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे, और उस समय आप पर नज़ा की अवस्था थी। थोड़ी ही देर बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का देहावसान हो गया। इसके कारण मुसलमानों की सेना जुरुफ़ के स्थान से मदीना वापस लौट आई और हज़रत बुरैदा बिन हुसैब रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु का ध्वज लेकर आए और उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के द्वार पर गाड़ दिया। एक रिवायत के अनुसार जब हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की सेना ज़ू-ख़ुशुब के स्थान पर थी, उसी समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का देहावसान हो गया था। ज़ू-ख़ुशुब भी मदीना से एक रात की दूरी पर स्थित है और शाम के मार्ग पर स्थित एक घाटी है। किंतु किसी भी स्थिति में वे लोग वापस लौट आए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विसाल के बाद, जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत हो गई, तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत बुरैदा बिन हुसैब रज़ियल्लाहु अन्हु को आदेश दिया कि ध्वज लेकर उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के घर जाओ, ताकि वे अपने उद्देश्य के लिए प्रस्थान करें। हज़रत बुरैदा ध्वज को सेना के पहले पड़ाव तक ले आए।

(तारीख़ुत-तबरी, भाग 2, पृष्ठ 224, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2012 ई.)(अत-तबक़ातुल कुबरा, इब्न सअद, भाग 2, पृष्ठ 146–147, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2012 ई.)(सुबुलुल हुदा वल-रशाद, भाग 6, पृष्ठ 248, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, 1993 ई.)(अल-बिदाया वन्निहाया, भाग 3, खंड 6, पृष्ठ 302, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2001 ई.)(मुअजमुल बुलदान, भाग 1, पृष्ठ 101 तथा 579–580, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या)(फ़रहंगे सीरत, पृष्ठ 87, 114, 119, ज़वार अकादमी पब्लिकेशन्स, कराची, 2003 ई.)

इस सेना की संख्या तीन हज़ार बताई जाती है, जिनमें से एक हज़ार घुड़सवार थे, और एक दूसरी रिवायत के अनुसार हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु को सात सौ आदमियों के साथ शाम की ओर भेजा गया था।

(शरह अल्लामा ज़रक़ानी अला अल-मवाहिब अल-लदुनिय्या, भाग 4, पृष्ठ 155, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, 1996 ई.)(सुबुलुल हुदा वल-रशाद, भाग 6, पृष्ठ 250, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, 1993 ई.)(अल-बिदाया वन्निहाया, भाग 3, खंड 6, पृष्ठ 302, सन 11 हिजरी, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2001 ई.)

एक रिवायत में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के देहावसान के दूसरे दिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने घोषणा करवा दी कि उसामा का अभियान पूरा होकर रहेगा। उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की सेना में से कोई भी व्यक्ति मदीना में शेष न रहे, बल्कि सभी लोग जुरुफ़ में उनकी सेना से आकर मिल जाएँ।

(तारीख़ुत-तबरी, भाग 2, पृष्ठ 244, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2012 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि "जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का देहावसान हो गया, तो समूचा अरब विद्रोही हो गया और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तथा हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे वीर पुरुष भी इस फ़ित्ने को देखकर घबरा गए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी मृत्यु के निकट रोमी क्षेत्र पर आक्रमण करने के लिए एक सेना तैयार की थी और हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु को उसका सेनापति नियुक्त किया था। यह सेना अभी प्रस्थान नहीं कर पाई थी कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का देहावसान हो गया। आपकी मृत्यु के पश्चात जब अरब विद्रोही हो गया, तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने यह सोचा कि यदि ऐसे विद्रोह के समय उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की सेना को रोमी क्षेत्र पर आक्रमण के लिए भेज दिया गया, तो मदीना में पीछे केवल वृद्ध पुरुष, बच्चे और स्त्रियाँ ही रह जाएँगी और मदीना की रक्षा का कोई प्रबंध शेष नहीं रहेगा। इसलिए उन्होंने यह सुझाव दिया कि वरिष्ठ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का एक प्रतिनिधिमंडल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की सेवा में जाए और उनसे निवेदन करे कि इस सेना को विद्रोह के शांत होने तक रोक लिया जाए। अतः हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु और अन्य बड़े-बड़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम आपकी सेवा में उपस्थित हुए और यह निवेदन प्रस्तुत किया कि विद्रोह के समाप्त होने तक इसे रोक लिया जाए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह बात सुनी, तो उन्होंने अत्यंत क्रोध के साथ उस प्रतिनिधिमंडल को उत्तर दिया कि क्या तुम यह चाहते हो कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के देहावसान के बाद अबू क़हाफ़ा का बेटा, अर्थात हज़रत अबू बक्र, सबसे पहला काम यह करे कि जिस सेना को रवाना करने का आदेश रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दिया था, उसे रोक ले? फिर आपने फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम! यदि शत्रु की सेनाएँ मदीना में घुस आएँ और कितनी ही मुसलमान स्त्रियों के शव घसीटती फिरें, तब भी मैं उस सेना को नहीं रोकूँगा, जिसे रवाना करने का निर्णय रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किया था।"

यह साहस और वीरता हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु में इसी कारण उत्पन्न हुई कि अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है: "मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं, वे काफ़िरों के विरुद्ध अत्यंत कठोर हैं।" जिस प्रकार बिजली के साथ यदि साधारण तार भी जुड़ जाए, तो उसमें महान शक्ति उत्पन्न हो जाती है, उसी प्रकार मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के संबंध के परिणामस्वरूप आपके मानने वाले भी "अशिद्दाउ अलल-कुफ़्फ़ार" के सच्चे प्रतीक बन गए।

(सीरत रूहानी, भाग 6, अनवारुल उलूम, भाग 22, पृष्ठ 593–594)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उसामा की रवानगी के संबंध में अपनी लतीफ़ तस्नीफ़ सर्रुल-ख़िलाफ़ा में बयान फ़रमाते हैं कि "इब्न असीर ने अपनी तारीख़ में लिखा है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का विसाल हुआ और आपकी वफ़ात की ख़बर मक्का तथा वहाँ के गवर्नर अत्ताब बिन असीद तक पहुँची, तो अत्ताब छिप गया और मक्का काँप उठा और क़रीब था कि उसके निवासी मुरतद हो जाते... और आगे लिखा है कि 'अरब मुरतद हो गए। हर क़बीले में से आम लोग या ख़ास लोग मुरतद हो गए' और निफ़ाक़ प्रकट हो गया, और यहूदियों तथा ईसाइयों ने गर्दनें उठाकर देखना शुरू कर दिया।" अर्थात वे यह देख रहे थे कि अब मुसलमान कमज़ोर हो गए हैं और अब उन पर आक्रमण किया जा सकता है। "और मुसलमानों की स्थिति अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात के कारण, तथा अपनी संख्या की कमी और शत्रुओं की अधिकता के कारण ऐसी हो गई थी जैसी वर्षा वाली रात में भीगी हुई भेड़ों की होती है," अर्थात वे भीगी हुई होती हैं, न हिलने-डुलने की शक्ति रहती है। "इस पर लोगों ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि ये लोग केवल उसामा की सेना को ही मुसलमानों की सेना समझते हैं, और जैसा कि आप देख रहे हैं, अरबों ने आपसे विद्रोह कर दिया है। अतः यह उचित नहीं कि आप मुसलमानों की इस जमाअत को अपने से अलग कर दें।" इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया :

"उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में मेरी जान है! यदि मुझे इस बात का भी यक़ीन हो जाए कि दरिंदे मुझे उठा ले जाएँगे, तब भी मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म के अनुसार उसामा की सेना को अवश्य भेजूँगा। जो निर्णय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है, मैं उसे रद्द नहीं कर सकता।"

(सर्रुल-ख़िलाफ़ा, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 8, पृष्ठ 394, हाशिया; उर्दू अनुवाद, सर्रुल-ख़िलाफ़ा, पृष्ठ 188-189, प्रकाशित नज़ारत इशाअत, रब्वा)

अतः आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेश को पूर्ण रूप से क़ायम रखा और उसे लागू किया, और जो सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हुम हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु की सेना में सम्मिलित थे, उन्हें पुनः सेना में शामिल होने का आदेश दिया। आपने फ़रमाया कि जो भी व्यक्ति पहले उसामा की सेना में शामिल था और जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसमें शामिल होने का हुक्म दिया था, वह किसी भी हालत में पीछे न रहे और न ही मैं उसे पीछे रहने की अनुमति दूँगा। चाहे उसे पैदल ही क्यों न जाना पड़े, वह अवश्य जाएगा। इस प्रकार कोई भी पीछे न रहा, अर्थात सभी चल पड़े।

(शरह अल्लामा ज़रक़ानी अला अल-मवाहिब अल-लदुनिय्या, जिल्द 4, पृष्ठ 155, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 1996)

बहरहाल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु द्वारा इस सेना को रवाना करने के विषय में लिखा है कि जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के आदेशानुसार जिश-ए-उसामा जुरुफ़ के स्थान पर एकत्र हो गया, तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु स्वयं वहाँ तशरीफ़ ले गए और वहाँ जाकर सेना का निरीक्षण किया तथा उसे व्यवस्थित किया।

इस संबंध में यह भी उल्लेख मिलता है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि यदि आप उचित समझें तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मेरे कार्यों में सहायता के लिए पीछे छोड़ दें। क्योंकि इस सेना में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी सम्मिलित थे, अतः हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसकी अनुमति दे दी।

(तारीख़ुत-तबरी, जिल्द 2, पृष्ठ 246, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2012)

इस घटना के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जब भी हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु से मिलते, यहाँ तक कि ख़लीफ़ा चुने जाने के बाद भी, तो उन्हें संबोधित करते हुए कहते : "अस्सलामु अलैक ऐयुहल्ल-अमीर।" अर्थात हे अमीर, आप पर शांति हो।

और इसके उत्तर में उसामा कहते : "ग़फ़रल्लाहु लक।"

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु को अपनी हिदायत के साथ यह भी फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तुम्हें जो कुछ करने का आदेश दिया है, वह सब अवश्य करना, और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेशों के पालन में किसी प्रकार की कोताही न करना।

(अल-कामिल फ़ित-तारीख़, जिल्द 2, पृष्ठ 199-200, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2006)(अस-सीरतुल-हलबीया, जिल्द 3, पृष्ठ 294, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2002)(तारीख़ुत-तबरी, जिल्द 2, पृष्ठ 246, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2012)

युद्ध का विवरण पहले बयान किया जा चुका है, इसलिए यहाँ उसे छोड़ता हूँ। यह सेना, जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था, सफल होकर वापस लौटी। शत्रु या तो मारा गया या बंदी बना लिया गया। इस युद्ध में किसी भी मुसलमान की जान का कोई नुक़सान नहीं हुआ। रिवायतों के अनुसार यह सेना चालीस से सत्तर दिनों तक बाहर रहने के बाद मदीना वापस पहुँची थी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की गहरी मुहब्बत का यह हाल था कि उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के जिस झंडे पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं अपने हाथ से गाँठ लगाई थी, उसके बारे में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया था कि यह कैसे संभव है कि इब्ने अबू क़हाफ़ा उस गाँठ को खोल दे, जिसे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं अपने हाथ से बाँधा हो।

अतः जिश-ए-उसामा की वापसी पर उस झंडे की गाँठ नहीं खोली गई और वह झंडा बाद में भी हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु के घर में ही रहा, यहाँ तक कि हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु का भी देहावसान हो गया।

(अल-कामिल फ़ित-तारीख़, जिल्द 2, पृष्ठ 200, मुद्रित दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, 2006)(अत-तबक़ातुल-कुबरा, इब्न सअद, जिल्द 2, पृष्ठ 147, सरिया-ए-उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु, मुद्रित दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बैरूत, 2012)(अल-मसीरतुल-इस्लामिया लिजील अल-ख़िलाफ़तिर-राशिदा, जिल्द अव्वल : अबू बकर अस-सिद्दीक़, तालीफ़ मुनीर मुहम्मद अल-ग़ज़्बान, पृष्ठ 34-35, दारुस्सलाम, 2015)

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ

हे अल्लाह! मुहम्मद और आले-मुहम्मद पर दुरूद भेज।

ग़ज़वात का यह वर्णन यहाँ समाप्त होता है। आगे चलकर, इंशा अल्लाह, सीरत के कुछ अन्य पहलुओं पर विचार किया जाएगा।

इस समय मैं दो दिवंगत व्यक्तियों का भी उल्लेख करना चाहता हूँ और बाद में उनका जनाज़ा पढ़वाऊँगा, इंशा अल्लाह।

श्रीमान अज़ीज़ुर्रहमान ख़ालिद साहब, मुरब्बी सिलसिला, का कुछ दिनों पूर्व अमेरिका में 79 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम के नाना हज़रत मियाँ रंग अली साहब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। अज़ीज़ुर्रहमान ख़ालिद साहब के जामिया में प्रवेश का प्रसंग भी कुछ इस प्रकार है कि वे कहते थे : जब मैं सातवीं कक्षा में था, तो एक दिन तालीमुल-इस्लाम हाई स्कूल की सभा में हज़रत मौलाना क़ाज़ी मुहम्मद नज़ीर साहब रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए और वक़्फ़-ए-ज़िंदगी की आवश्यकता और महत्त्व पर व्याख्यान दिया। उस व्याख्यान का अनेक विद्यार्थियों पर गहरा प्रभाव पड़ा। जब व्याख्यान समाप्त हुआ, तो मरहूम के हृदय में जीवन वक़्फ़ करने का जज़्बा पैदा हुआ और वे सीधे जामिया चले गए। वहाँ संक्षिप्त साक्षात्कार के बाद 1960 ईस्वी में उन्हें जामिया में प्रवेश मिल गया और 1969 ईस्वी में उन्होंने जामिया से शाहिद की डिग्री प्राप्त की। इस दौरान जामिया में नौ वर्ष का समय इसलिए लगा कि एक रेल दुर्घटना में उन्हें गंभीर चोटें आई थीं, जिसके कारण दो वर्ष नष्ट हो गए, किंतु इसके बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और उनका जीवन बच गया। वे यह कहा करते थे कि ख़लीफ़तुल-मसीह सालीस रहमहुल्लाहु तआला की दुआओं से मेरी जान बची है। जामिया से उत्तीर्ण होकर मुबल्लिग़ बनने के बाद उन्होंने सिएरा लियोन, नाइजीरिया, घाना, तंज़ानिया और ज़ंजीबार जैसे बाहरी देशों में तथा पाकिस्तान में भी विभिन्न स्थानों पर मुरब्बी के रूप में सेवाएँ अंजाम दीं। वापस आने के बाद उन्हें तहरीक-ए-जदीद में वकालत-ए-इशाअत, रब्वा में सेवा की तौफ़ीक़ मिलती रही।

उनके नवासे हमज़ा उबैदुल्लाह मुरब्बी हैं। जामिया से फ़ारिग़ हुए हैं। वे बताते हैं कि अज़ीज़ुर्रहमान साहिब कहा करते थे कि अफ़्रीका में ऐसा समय भी आया करता था कि चावल उबालकर उस पर नमक छिड़ककर खा लिया करते थे और कोई सालन आदि खाने की वस्तु उपलब्ध नहीं होती थी। कभी-कभी ऐसे दिन भी आते थे जब साधारण भोजन भी सुलभ नहीं होता था। उबले हुए चावल तक उपलब्ध नहीं होते थे और कई-कई दिनों तक भूखा रहना पड़ता था।

तो ये प्रारम्भिक मुरब्बियों और मुबल्लिग़ों के कार्य थे, जिन्हें आजकल के मुरब्बियों और मुबल्लिग़ों को अपने सामने आदर्श के रूप में रखना चाहिए।

अनीसुर्रहमान अंस उनके पुत्र हैं। वे बताते हैं कि वे कभी भी भोजन को नष्ट नहीं होने देते थे। जलसा के अवसर पर भी कई बार ऐसा हुआ कि थाली में भोजन परोसवाने के बजाय मेज़ों पर पड़ी रोटी के बचे हुए टुकड़े ही खा लेते थे। कहा करते थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम यदि ये रोटी के टुकड़े खा सकते हैं तो हम क्यों नहीं खा सकते। युवावस्था से ही तहज्जुद अदा करने वाले थे। सुशील, मिलनसार, सहृदय, सदाचारी, परिश्रमी और निष्ठावान व्यक्ति थे। ख़िलाफ़त से गहरा श्रद्धा-संबंध था। मरहूम मूसी भी थे। ये मेरे साथ घाना में भी रहे हैं, जब मैं वहाँ रहा हूँ। अत्यंत निष्ठा, परिश्रम और सादगी के साथ उन्होंने कार्य किया। निःस्वार्थ भाव से सेवा की। उनके दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ हैं। बड़ी संख्या में पोते-पोतियाँ और नवासे-नवासियाँ हैं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार करे। उनके दर्जे बुलंद करे।

दूसरा उल्लेख श्रीमान एद्दी हुमैदी (Eddi Humaedi) साहिब का है। वे इंडोनेशिया के थे। 22 नवम्बर को उमरह की सआदत के बाद वे अचानक बीमार हो गए और उसी बीमारी से सतहत्तर वर्ष की आयु में मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके परिवार में अहमदियत 1930 के दशक में आई, जब उनके मामू मुहम्मद रऊफ़ साहिब ने हज़रत मौलाना रहमत अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु के माध्यम से बैअत की। इसके बाद उनके नाना और माता ने भी बैअत कर ली। उनके दामाद बासुकी अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं। वे बताते हैं कि दिन-रात उन्हें तबलीग़ का शौक़ रहता था और यही अभिलाषा रखते थे कि तबलीग़ की राह में जान दूँ। कहा करते थे कि जब भी हमारी मुलाक़ात होती, तबलीग़ ही उनका विषय होता, और तबलीग़ का उनका ढंग अनेक मुबल्लिग़ों के लिए प्रेरणा का कारण बनता था।

उनकी पुत्रियाँ भी लिखती हैं कि वे अज़ान से पहले मस्जिद चले जाते और ज़िक्र-ए-इलाही में बैठकर समय व्यतीत करते। प्रतिदिन क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करते, अनुवाद और तफ़्सीर पढ़ते और तबलीग़ के लिए आवश्यक आयतों पर निशान लगाते। उन्होंने कभी तहज्जुद की नमाज़ नहीं छोड़ी। छिहत्तर वर्ष की आयु में भी तबलीग़ के लिए मोटरसाइकिल पर यात्राएँ करते थे और बच्चों से कहा करते थे कि माल की क़ुर्बानी में कमी न करो। यह अल्लाह का हक़ है। यथासंभव अधिक से अधिक क़ुर्बानी करो और सावधान रहो कि जमाअत के माल में से एक पैसा भी उपयोग में न लाना, उसका हिसाब देना पड़ेगा।

उमरह के दौरान उनकी जो समूह-नेतृ थीं, उन्होंने लिखा है कि उमरह के समय वे बराबर यही कहते रहते थे कि यहाँ से लौटकर मैं तबलीग़ करूँगा और लोगों को बताऊँगा कि जमाअत अहमदिया के सदस्य मक्का में हज की इबादत करते हैं। जब वे बीमार पड़े तो वहाँ चिकित्सक ने उन्हें देखा, और जब वफ़ात हुई तो वह चिकित्सक कहने लगा कि अल्लाह तआला को उनकी नेकियाँ पसंद आ गईं, इसी कारण जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न होने की सआदत मिली। वहाँ वफ़ात हुई तो वहीं जन्नतुल बक़ीअ में उनकी दफ़न भी हुई।

अब हमारे पाकिस्तान में अहमदियों को अपने क़ब्रिस्तान में दफ़न नहीं करने दिया जाता, और यदि किसी अन्य मुसलमान की क़ब्र पास हो तो कहते हैं कि उसके निकट नहीं आना; और अल्लाह तआला ने उन्हें यह अवसर दिया कि वे जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न हुए। अब जाकर वहाँ से भी उनकी क़ब्र उखड़वाएँ, पर उनमें इतनी शक्ति कहाँ! स्वयं ये मौलवी अपने अंजाम को पहुँचने वाले हैं, इन शा अल्लाह।

सेक्रेटरी तबलीग़ इंडोनेशिया गुनावन वर्दी साहिब कहते हैं कि वे एक सफल और अत्यंत उत्साही दाई थे, जिन्होंने वास्तव में इस नारे को अपने जीवन का अंग बना लिया था कि कोई दिन तबलीग़ के बिना न गुज़रे। उनके पास एक पुरानी मोटरसाइकिल थी, उसी पर बैठकर दूर-दराज़ के गाँवों में यात्राएँ करते और ऐसे क्षेत्रों में भी जाते जहाँ जमाअतों के लिए विरोध था। तबलीग़ के परिणामस्वरूप सैकड़ों लोगों तक उन्होंने संदेश पहुँचाया और उनमें से अनेक ने बैअत भी की। ख़िलाफ़त से उनका अत्यधिक संबंध, प्रेम और स्नेह था। अल्लाह के फ़ज़्ल से वे मूसी थे। पीछे रहने वालों में चार पुत्रियाँ और दस नवासे शामिल हैं। जैसा कि बताया गया, उनके एक दामाद मुरब्बी हैं। अल्लाह तआला मग़फ़िरत और रहमत का व्यवहार करे और उनके दर्जे बुलंद करे।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 26 दिसम्बर 2025, पृष्ठ 2 से 8)

जलसा सालाना और खुदा की तकदीरें

मुहम्मद कलीम ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, मडिकेरी, कर्नाटक प्रांत

हज़रत अक़दस मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार इस्लाम का पुनर्जागरण इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रकट होने के माध्यम से निश्चित था। निर्धारित समय पर हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम का प्रकट होना हुआ और आपने दैवीय इच्छा के अनुसार अपने प्रेषण का उद्देश्य इस प्रकार स्पष्ट किया कि परमेश्वर चाहता है कि पृथ्वी की विभिन्न बस्तियों में निवास करने वाली समस्त आत्माओं को : चाहे वे यूरोप में हों या एशिया में : जो सद्गुणी स्वभाव रखती हैं, एकेश्वरवाद की ओर आकर्षित करे और अपने सेवकों को एक ही धर्म पर एकत्र कर दे। यही परमेश्वर का उद्देश्य है, जिसके लिए मुझे संसार में भेजा गया है।

(अल-वसिय्यत, पृष्ठ 5, मुद्रित क़ादियान 2005)

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए दैवीय व्यवस्था की स्थापना की गई। इसकी पाँच शाखाएँ हैं। इन पाँच शाखाओं में से तीसरी शाखा का उल्लेख करते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कहा कि इस व्यवस्था की तीसरी शाखा वे लोग हैं जो इसमें आने-जाने वाले हैं, सत्य की खोज में यात्रा करने वाले हैं तथा अन्य विविध प्रयोजनों से आने वाले हैं, जो इस दिव्य व्यवस्था का समाचार पाकर अपनी-अपनी नीयतों की प्रेरणा से भेंट के लिए आते रहते हैं।

(फ़तह इस्लाम, पृष्ठ 20, प्रथम संस्करण)

इसी तीसरी शाखा की पूर्णता का एक श्रेष्ठ उदाहरण वार्षिक अधिवेशन की स्थापना है। इस पृष्ठभूमि में वार्षिक अधिवेशन की पहली विशेषता यह है कि इसकी आधारशिला स्वयं अल्लाह तआला ने अपने हाथ से रखी है। इस विषय में स्वयं हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं कि इस अधिवेशन को साधारण मानवीय सभाओं के समान न समझो। यह वह कार्य है जिसकी शुद्ध पुष्टि सत्य द्वारा होती है और जो इस्लाम के वाक्य की उन्नति पर आधारित है। इस आंदोलन की आधारशिला अल्लाह तआला ने अपने हाथ से रखी है और इसके लिए उसने ऐसी जातियों को तैयार किया है जो शीघ्र ही इसमें सम्मिलित होंगी, क्योंकि यह उस सर्वशक्तिमान का कार्य है जिसके सामने कुछ भी असंभव नहीं।

(मजमूआ इश्तेहारात, खंड प्रथम, पृष्ठ 341, मुद्रित लंदन 1984)

पहला वार्षिक अधिवेशन जो 1891 ईस्वी में हुआ, उसमें 75 सौभाग्यशाली व्यक्ति उपस्थित हुए, जिन्हें अब्राहीमी पक्षी भी कहा जा सकता है। अधिवेशन का स्थान, चाहे उसे अधिवेशन-स्थल कहें या सभा-स्थल, मस्जिद अक़सा था।

वार्षिक अधिवेशन की स्थापना के साथ ही उसके विरोध का क्रम भी आरंभ हो गया। लाहौर की चीनियाँ वाली मस्जिद के इमाम, रहीम बख़्श नामक एक मौलवी के समक्ष एक धार्मिक प्रश्न प्रस्तुत किया गया, जिसका आशय यह था कि ऐसे निर्धारित अधिवेशन में दूर-दराज़ से यात्रा करके जाना किस प्रकार का कर्म है और यदि ऐसे अधिवेशन के लिए किसी भवन का निर्माण धर्मशाला के रूप में किया जाए तो उसमें सहयोग देने वाले के विषय में क्या निर्णय होगा।

(उद्धृत: मजमूआ इश्तेहारात, खंड प्रथम, पृष्ठ 354)

यह वार्षिक अधिवेशन के विरोध की पहली चेष्टा थी, किंतु जो लोग अल्लाह तआला की नियति से टकराते हैं, उनका वही परिणाम होता है जो उनका हुआ। वार्षिक अधिवेशन का आयोजन उसकी नियति के अनुसार निरंतर होता रहा और विरोध करने वालों के हृदयों में जलन और असंतोष बना रहा। यह वार्षिक अधिवेशन की गरिमा और वैभव का प्रभाव था और आगे भी ऐसा ही होता रहेगा। जब धार्मिक आदेशों से कार्य सिद्ध न हुआ तो विरोधियों ने मार्गों में बाधाएँ उत्पन्न कीं और नए तथा अपरिचित लोगों को बहकाने के लिए उनके मन में अनेक प्रकार की शंकाएँ उत्पन्न करने लगे।

इस पवित्र वार्षिक अधिवेशन की अतिथि-सेवा किस प्रकार आरंभ हुई, इस संबंध में एक आस्था-वर्धक घटना वर्णनीय है। आपने कहा कि एक बार अधिवेशन के अवसर पर व्यय के साधन शेष नहीं रहे। उन दिनों अधिवेशन के लिए चंदा एकत्र नहीं किया जाता था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम स्वयं अपने संसाधनों से ही व्यवस्था करते थे। मीर नासिर नवाब साहब ने आकर निवेदन किया कि रात्रि में अतिथियों के लिए कोई व्यवस्था शेष नहीं है। आपने कहा कि पत्नी से कोई आभूषण लेकर, जो संभव हो, बेचकर या गिरवी रखकर व्यवस्था कर लो। इस प्रकार आभूषण बेचकर या गिरवी रखकर धन लाया गया और अतिथियों की व्यवस्था हो गई। दो दिन बाद पुनः कहा गया कि अगले दिन के लिए भी कुछ शेष नहीं है। आपने उत्तर दिया कि हमने बाह्य साधनों के अनुसार व्यवस्था कर ली थी, अब हमें आवश्यकता नहीं है। जिनके अतिथि हैं, वही स्वयं प्रबंध करेगा। अगले दिन प्रातः जब डाकवाहक आया तो अनेक स्थानों से आए हुए दस-पंद्रह के लगभग धनादेश प्राप्त हुए, जिन पर लिखा था कि हम उपस्थित होने में असमर्थ हैं, अतिथियों के व्यय के लिए यह धन भेज रहे हैं। इस पर आपने कहा कि जिस प्रकार सांसारिक व्यक्ति को अपने संचित धन पर भरोसा होता है, उससे कहीं अधिक परमेश्वर पर भरोसा रखने वालों को उस पर विश्वास होता है और जब आवश्यकता पड़ती है, परमेश्वर तुरंत सहायता भेज देता है।

(सीरतुल महदी, खंड 2, पृष्ठ 97–98)

इस वार्षिक अधिवेशन में सम्मिलित होने वालों का उद्देश्य बताते हुए आपने कहा कि इस अधिवेशन में ऐसे सत्य और आध्यात्मिक ज्ञान का वर्णन किया जाएगा जो विश्वास, निश्चय और आत्मिक पहचान को उन्नत करने के लिए आवश्यक हैं। साथ ही मित्रों के लिए विशेष प्रार्थनाएँ और विशेष ध्यान होगा तथा यथाशक्ति परम करुणामय खुदा से यह प्रयास किया जाएगा कि वह उन्हें अपनी ओर आकर्षित करे, स्वीकार करे और उनके भीतर पवित्र परिवर्तन उत्पन्न करे। इन अधिवेशनों का एक अस्थायी लाभ यह भी होगा कि प्रत्येक वर्ष नए सदस्य पुराने सदस्यों से मिलकर परस्पर परिचय और स्नेह का संबंध बढ़ाएँगे। जो सदस्य इस अवधि में इस नश्वर संसार से विदा हो जाएँगे, उनके लिए प्रार्थना की जाएगी और सभी को आध्यात्मिक रूप से एक करने का प्रयास किया जाएगा।

(मजमूआ इश्तेहारात, खंड प्रथम, पृष्ठ 303)

इसी पवित्र उद्देश्य के अंतर्गत आयोजित इस अधिवेशन की एक झलक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के शब्दों में इस प्रकार प्रकट होती है। आपने यह भाषण 28 दिसंबर 1953 को दिया। आपने कहा कि हे अल्लाहीय राज्य के संगीतकारो, एक बार फिर उस नाद को इतनी प्रबलता से बजाओ कि संसार के कान फट जाएँ। एक बार फिर अपने हृदय का रक्त उसमें भर दो, ताकि आकाश के स्तंभ भी काँप उठें और स्वर्गदूत भी विचलित हो जाएँ, जिससे परमेश्वर का राज्य इस धरती पर स्थापित हो जाए। इसी उद्देश्य के लिए मैंने नवीन आंदोलन आरंभ किया है और इसी उद्देश्य के लिए तुम्हें समर्पण की शिक्षा देता हूँ।

अल्लाहीय राज्य के इन संगीतकारों की यह महिमा अल्लाह तआला की एक ऐसी नियति थी जिसकी संसार में कहीं और कोई मिसाल नहीं मिलती।

अल्लाह तआला वार्षिक अधिवेशन 2025 में सम्मिलित होने वाले समस्त अतिथियों की रक्षा करे और सभी को हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रार्थनाओं से भरपूर लाभ प्रदान करे।

(आमीन) ★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

''या मन इस्मुहू दवा व ज़िक्रुहू शिफ़ा'' : इस दुआ का संदर्भ और इसकी वास्तविकता क्या है?

रोज़े के बिना रमज़ान का एतिकाफ़ क्या बिदअत माना जाएगा, और क्या रोज़े के बिना एतिकाफ़ की कोई सुन्नत या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा से कोई मिसाल मिलती है?

सोमवार और गुरुवार को नफ़ली रोज़े रखने में क्या हिकमत है, तथा क्या इन दोनों दिनों के अतिरिक्त अन्य दिनों में भी नफ़ली रोज़े रखे जा सकते हैं?

सूद लेना और देना हराम है। पश्चिमी देशों में जब कोई अपना घर ख़रीदना चाहता है तो उसे उस पर भी सूद देना पड़ता है। तो क्या एक मुसलमान उन देशों में अपना घर नहीं ख़रीद सकता?

रमज़ान में घरों को सजाने और रमज़ान कैलेंडर बनाने के विषय में मार्गदर्शन।

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त 53-54)

प्रश्न: मीरपुर, आज़ाद कश्मीर से एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में लिखा कि लाइलाज मरीज़ों पर पढ़कर दम करने के लिए एक दुआ ''या मन इस्मुहू दवा व ज़िक्रुहू शिफ़ा'' प्रचलित है। इस दुआ का संदर्भ और इसकी वास्तविकता क्या है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 9 अप्रैल 2022 में इस प्रश्न के संबंध में निम्नलिखित मार्गदर्शन प्रदान किया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: मेरी जानकारी में तो ऐसी कोई दुआ नहीं है जो आपने अपने पत्र में लिखी है। हाँ, हदीसों में यह उल्लेख मिलता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम स्वयं भी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा भी सूरह फ़ातिहा, मुअव्विज़तैन (अर्थात् सूरह फ़लक़ और सूरह नास) तथा कुछ अन्य दुआओं के माध्यम से बुख़ार, विभिन्न बीमारियों तथा साँप और बिच्छू आदि के काटने पर दम किया करते थे।

इसलिए हदीसों में यह घटना मिलती है कि सहाबा की एक टोली यात्रा पर निकली और एक क़बीले के पास जाकर ठहरी। उन्होंने उनसे भोजन माँगा, किंतु क़बीले वालों ने उनकी मेहमान-नवाज़ी से इंकार कर दिया। फिर उस क़बीले के सरदार को साँप या बिच्छू ने काट लिया। क़बीले वालों ने उसके उपचार का पूरा प्रयास किया, पर उसे कोई लाभ न हुआ। किसी ने सुझाव दिया कि जो बाहरी लोग हमारे पास आकर ठहरे हैं, उनसे भी पूछ लिया जाए, शायद उनमें से किसी के पास कोई इलाज हो। सहाबा से पूछने पर एक सहाबी ने कहा कि हाँ, मैं एक दम जानता हूँ, लेकिन चूँकि तुम लोगों ने हमारी मेहमान-नवाज़ी नहीं की, इसलिए अब मैं तुम्हारे सरदार पर दम नहीं करूँगा। इस पर क़बीले वालों ने सहाबा को बकरियों का एक रेवड़ देने का वादा किया। तब उस सहाबी ने सूरह फ़ातिहा पढ़कर क़बीले के सरदार पर दम किया। सूरह फ़ातिहा की बरकत से वह इस प्रकार ठीक हो गया कि मानो उसे किसी चीज़ ने काटा ही न हो। सहाबा ने क़बीले वालों से बकरियाँ ले लीं। एक व्यक्ति ने कहा कि इन बकरियों को आपस में बाँट लेते हैं, किंतु जिस सहाबी ने दम किया था, उन्होंने सुझाव दिया कि जब तक हम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित होकर यह घटना बयान न कर दें और यह न जान लें कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमें क्या आदेश देते हैं, तब तक ऐसा नहीं करना चाहिए। इसके बाद वे लोग हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए और पूरा घटनाक्रम बयान किया। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम्हें कैसे पता चला कि सूरह फ़ातिहा दम करने वाली सूरह है? तुमने बिल्कुल ठीक किया है। इन बकरियों को आपस में बाँट लो और मेरा भी एक हिस्सा निर्धारित करो। यह फ़रमा कर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मुस्कुरा दिए।

(सहीह बुख़ारी, किताबुत्-तिब्ब, बाबुन्नफ़्सि फ़िर्रुक़्या)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ''अज़्हिबिल्-बास, रब्बन्नास, बियदिकश्-शिफ़ा, ला काशिफ़ लहू इल्ला अंत'' (अर्थात् ऐ लोगों के पालनहार! तू इस तकलीफ़ को दूर कर दे, शिफ़ा तेरे ही हाथ में है, तेरे सिवा कोई इस तकलीफ़ को दूर नहीं कर सकता) पढ़कर दम किया करते थे।

(सहीह मुस्लिम, किताबुस्सलाम, बाब इस्तिहबाबि रुक़्यतिल्-मरीज़)

इसी प्रकार हदीसों से यह भी ज्ञात होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दम करते समय फूँक भी मारा करते थे।

(सुनन इब्न माजह, किताबुत्-तिब्ब, बाबुन्नफ़्सि फ़िर्रुक़्या)

यही तरीक़ा हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके सहाबा से भी मिलता है। इसलिए हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं: एक बार यह विनीत लेखक लाहौर से क़ादियान आया हुआ था और जमाअत लाहौर के कुछ अन्य साथी भी साथ थे। सूफ़ी अहमद दीन साहब मरहूम ने मुझसे अनुरोध किया कि मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में सिफ़ारिश करके सूफ़ी साहब के सीने पर दम करवा दूँ। उसी समय हज़रत साहब गली से अंदर की ओर जा रहे थे। मैंने आगे बढ़कर सूफ़ी साहब को प्रस्तुत किया और उनकी विनती निवेदन की। हुज़ूर ने कुछ पढ़कर सूफ़ी साहब के सीने पर दम किया (फूँक मारी) और फिर अंदर तशरीफ़ ले गए।

(ज़िक्र-ए-हबीब, लेखक हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु, पृष्ठ 137)

इसी प्रकार हज़रत पीर सिराजुल हक़ साहब नुमानी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं: एक बार मैं सरसावा से चलकर क़ादियान शरीफ़ हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम की सेवा में उपस्थित हुआ। उस समय हज़रत मौलाना मुरशिदना नूरुद्दीन साहब ख़लीफ़तुल मसीह अलैहिस्सलाम भी आए हुए थे। फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर सब बैठे थे और हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम भी तशरीफ़ फ़रमा थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: पीर साहब, हमने बहुत से पीर देखे हैं जो अमल और तावीज़ करते हैं। क्या कोई अमल आपको भी याद है, जिसे देखकर हमें भी यक़ीन आ जाए कि अमल होता है? मैंने निवेदन किया: हाँ, याद है। फ़रमाया: दिखाइए। मैंने कहा: समय आने दीजिए, दिखा दूँगा। हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: अवश्य, साहबज़ादे को याद होगा, इनके बड़ों से अमल चले आ रहे हैं। कोई दो घंटे बाद एक व्यक्ति आया जिसे ज़ातुल-जनब (पसली का तीव्र दर्द) था। मैंने कहा: देखिए, इस पर अमल करता हूँ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ने कहा: हाँ, अमल कीजिए। हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने भी फ़रमाया: हाँ, अमल कीजिए। मैंने उस व्यक्ति पर दम किया। अल्लाह तआला ने उसे दर्द से पूरी तरह आराम दिया और शिफ़ा प्रदान की। जब उसे आराम हो गया तो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: यह मेसमेरिज़्म है। उस समय मैंने मेसमेरिज़्म का नाम भी नहीं सुना था और न ही जानता था कि यह क्या चीज़ है। हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: साहबज़ादे साहब, आपने क्या पढ़ा था? मैंने निवेदन किया: ''हज़रत, सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आलि मुहम्मद पर दरूद'' और ''अल्हम्दु शरीफ़'' पढ़ी थी।

(तज़्किरतुल महदी, पृष्ठ 186, मुद्रित 1914, ज़िया-उल-इस्लाम प्रेस, क़ादियान)

अतः हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपके सहाबा से दम करना सिद्ध है, जिसमें अल्लाह तआला अपने विशेष अनुग्रह से, इन क़ुरआनी सूरहों और पवित्र ज़िक्रों की बरकत तथा बुज़ुर्गों की दुआ के परिणामस्वरूप मरीज़ को शिफ़ा प्रदान करता है।

जर्मनी से एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला से पूछा कि रोज़े के बिना रमज़ान का एतिकाफ़ क्या बिदअत नहीं माना जाएगा, और क्या रोज़े के बिना एतिकाफ़ की कोई सुन्नत या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा से कोई मिसाल मिलती है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने

पत्र दिनांक 10 मई 2022 में उत्तर दिया:

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत से यही सिद्ध होता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रमज़ान का एतिकाफ़ रोज़ों के साथ ही किया करते थे। इसी कारण हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एतिकाफ़ करने वाले के लिए सुन्नत यह है कि वह न तो किसी मरीज़ की अयादत के लिए जाए, न जनाज़े में शरीक हो, न पत्नी को (कामुकता के साथ) छुए और न उससे सहवास करे, और न किसी आवश्यकता के अतिरिक्त मस्जिद से बाहर निकले। रोज़े के बिना एतिकाफ़ सही नहीं है और जामा मस्जिद के अतिरिक्त कहीं एतिकाफ़ सही नहीं। (सुनन अबू दाऊद, किताबुस्सौम)

अतः मस्नून एतिकाफ़ के विषय में सहाबा और विद्वानों का यही मत है कि इसके लिए रोज़े आवश्यक हैं, और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की निरंतर सुन्नत यही थी कि आप रमज़ान के अंतिम दस दिनों में मस्जिद में एतिकाफ़ किया करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल एतिकाफ़)

हाँ, रमज़ान के मस्नून एतिकाफ़ के अतिरिक्त सामान्य एतिकाफ़ या मन्नत का एतिकाफ़ रोज़े के बिना भी किया जा सकता है और यह कुछ दिनों या कुछ घंटों का भी हो सकता है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्होंने कहा: मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में निवेदन किया कि मैंने अज्ञानकाल में मन्नत मानी थी कि मैं एक रात मस्जिदे हराम में एतिकाफ़ करूँगा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अपनी मन्नत पूरी करो। (सुनन तिरमिज़ी)

अतः निष्कर्ष यह है कि रमज़ान का मस्नून एतिकाफ़ रोज़ों के साथ, रमज़ान के अंतिम दस दिनों में मस्जिद में होता है, जबकि रमज़ान के अतिरिक्त सामान्य एतिकाफ़ रोज़े के बिना और कम या अधिक समय के लिए हो सकता है।

कनाडा की जामिआ अहमदिया के एक छात्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की सेवा में प्रश्न भेजा कि सामान्यतः सोमवार और गुरुवार को नफ़ली रोज़े रखने में क्या हिकमत है, तथा क्या इन दोनों दिनों के अतिरिक्त अन्य दिनों में भी नफ़ली रोज़े रखे जा सकते हैं? हुज़ूर अनवर ने 10 मई 2022 के पत्र में उत्तर दिया:

सोमवार और गुरुवार को नफ़ली रोज़े रखने की विभिन्न वजहें हदीसों में वर्णित हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सोमवार और गुरुवार के दिन लोगों के कर्म अल्लाह तआला के समक्ष प्रस्तुत किए जाते हैं, और मैं चाहता हूँ कि मेरे कर्म इस अवस्था में प्रस्तुत हों कि मैं रोज़े से हूँ। (सुनन तिरमिज़ी)

एक अन्य हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सोमवार और गुरुवार को जन्नत के द्वार खोल दिए जाते हैं और हर उस व्यक्ति को क्षमा कर दिया जाता है जिसने अल्लाह तआला के साथ किसी को साझी न ठहराया हो। (सुनन तिरमिज़ी)

एक अन्य हदीस में सोमवार के रोज़े के विषय में पूछा गया तो आपने फ़रमाया कि इसी दिन मेरा जन्म हुआ और इसी दिन मुझ पर वह्य का आरंभ हुआ।

(सहीह मुस्लिम)

सोमवार और गुरुवार को नफ़ली रोज़ा रखना हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सामान्य सुन्नत थी। (सुनन नसाई) इसी प्रकार 'अय्यामे बीज़' अर्थात् प्रत्येक माह की तेरह, चौदह और पंद्रह तारीख़ को भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नियमित रूप से रोज़ा रखते थे। (सुनन नसाई)

इसके अतिरिक्त यौमे अरफ़ा (9 ज़िलहिज्जा) और यौमे आशूरा (10 मुहर्रम) के रोज़े की भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने महान फ़ज़ीलत बयान की है। (सहीह मुस्लिम) किंतु जो व्यक्ति हज पर हो, उसके लिए यौमे अरफ़ा का रोज़ा रखना मना है। (सुनन इब्न माजह)

दोनों ईदों के दिन और अय्यामे तशरीक़ (11, 12 और 13 ज़िलहिज्जा), जो मुसलमानों के लिए उत्सव और भोजन के दिन हैं, के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति किसी भी दिन नफ़ली रोज़ा रख सकता है। किंतु केवल शुक्रवार को विशेष रूप से नफ़ली रोज़े के लिए निर्धारित करना मना है। (सुनन तिरमिज़ी)

जो व्यक्ति हज पर हो और उसने हज के साथ उमरा का लाभ भी उठाया हो तथा क़ुर्बानी की सामर्थ्य न रखता हो, वह अय्यामे तशरीक़ के तीन रोज़े हज के दिनों में रखेगा। (सहीह बुख़ारी)

नफ़ली रोज़ों के संबंध में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक विस्तृत हिदायत हदीस में इस प्रकार आती है: हज़रत अबू क़तादा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से 'सौमुद्दहर' अर्थात् जीवन भर रोज़ा रखने के विषय में पूछा गया तो आपने फ़रमाया: ऐसे व्यक्ति ने न रोज़ा रखा और न इफ़्तार किया। फिर आपसे दो दिन रोज़ा और एक दिन इफ़्तार के विषय में पूछा गया तो आपने फ़रमाया: कौन इसकी सामर्थ्य रखता है? फिर एक दिन रोज़ा और दो दिन इफ़्तार के विषय में पूछा गया तो आपने फ़रमाया: अल्लाह तआला हमें इसकी सामर्थ्य दे। फिर एक दिन रोज़ा और एक दिन इफ़्तार के विषय में पूछा गया तो आपने फ़रमाया: यह मेरे भाई हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के रोज़े हैं। फिर सोमवार के रोज़े के विषय में पूछा गया तो आपने फ़रमाया: यही वह दिन है जिसमें मेरा जन्म हुआ, इसी दिन मुझे नबूवत दी गई और इसी दिन मुझ पर क़ुरआन उतरा। आपने फ़रमाया: हर माह तीन रोज़े और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक रोज़े रखना पूरे जीवन के रोज़ों के समान है। अरफ़ा के दिन के रोज़े के विषय में आपने फ़रमाया: यह पिछले और आने वाले वर्ष के पापों का प्रायश्चित बन जाता है। आशूरा के दिन के रोज़े के विषय में फ़रमाया: यह पिछले एक वर्ष के पापों का प्रायश्चित बन जाता है। (सहीह मुस्लिम)

जर्मनी से एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछा कि सूद लेना और देना हराम है, किंतु पश्चिमी देशों में घर ख़रीदने पर सूद देना पड़ता है। तो क्या एक मुसलमान उन देशों में अपना घर नहीं ख़रीद सकता? हुज़ूर अनवर ने 10 मई 2022 के पत्र में उत्तर दिया:

पश्चिमी देशों में मॉर्गेज के माध्यम से जो घर ख़रीदे जाते हैं, उनमें सामान्यतः बैंक या किसी वित्तीय संस्था से ऋण लिया जाता है। जब तक यह ऋण चुकाया नहीं जाता, घर उसी बैंक या संस्था की संपत्ति रहता है। बैंक इस ऋण पर कुछ अतिरिक्त राशि भी लेता है, जिसे वह मुद्रा के अवमूल्यन के कारण बताता है।

इन देशों में हर व्यक्ति के लिए रहने के लिए घर ख़रीदना आसान नहीं होता। या तो उसे जीवन भर किराए के घर में रहना पड़ता है, जिसमें जीवन भर दिए गए किराए के अतिरिक्त कोई लाभ नहीं होता क्योंकि घर उसकी संपत्ति नहीं बनता, या फिर मजबूरी की स्थिति में वह मॉर्गेज की सुविधा से लाभ उठाकर अपने निवास के लिए घर ख़रीद लेता है। इसमें वह लगभग उतनी ही मासिक क़िस्त देता है जितना किराया देता, परंतु अंतर यह होता है कि क़िस्तें चुकाने के बाद घर उसकी संपत्ति बन जाता है।

अतः मॉर्गेज के माध्यम से घर ख़रीदना एक मजबूरी और विवशता की स्थिति है, जिससे केवल अपने निवास के लिए घर ख़रीदने तक लाभ उठाया जा सकता है। किंतु इस तरीक़े से व्यापार के रूप में एक के बाद एक घर ख़रीदते जाना किसी भी स्थिति में उचित नहीं है और जमाअत इसकी कभी प्रोत्साहना नहीं करती, बल्कि इससे रोकती है।

रब्वा के दारुल-इफ्ता के नाज़िम साहब ने क्रिसमस की तर्ज़ पर रमज़ान में घरों को सजाने और रमज़ान कैलेंडर बनाकर ईद तक दिनों की गिनती करने के विषय में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मार्गदर्शन चाहा। हुज़ूर अनवर ने 10 मई 2022 के पत्र में उत्तर दिया:

इस विषय में हमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस कथन ''निश्चय ही कर्मों का आधार नीयतें हैं'' को सामने रखना चाहिए। यदि रमज़ान में घरों को सजाने और रमज़ान कैलेंडर बनाने की नीयत यह हो कि घर के सदस्यों और बच्चों का ध्यान रमज़ान के महत्व की ओर आकर्षित किया जाए, घर में ऐसा वातावरण बनाया जाए कि विशेष रूप से बच्चे रमज़ान की इबादतों और दुआओं की ओर प्रेरित हों, ताकि सहरी और इफ़्तारी के समय वे इस माहौल को देखकर दुआ और इबादत में संलग्न हों और इस प्रकार रमज़ान के हर दिन का उत्साह और उमंग के साथ स्वागत करते हुए उसमें उतरने वाली बरकतों से लाभ उठा सकें, तो इस नीयत से ऐसा करने में प्रत्यक्षतः कोई आपत्ति नहीं।

लेकिन यदि उद्देश्य केवल दिखावा हो, और यह सारी सजावट मात्र आडंबर और प्रदर्शन के लिए की जाए, और हर दिन यह सोचकर गुज़ारा जाए कि अच्छा हुआ इतने दिन बीत गए, जिनसे छुटकारा मिला, बाक़ी दिन भी जल्दी बीत जाएँ और फिर ईद मनाएँ, और ईद में भी वास्तविक प्रसन्नता की बजाय केवल बाहरी प्रसन्नताओं पर ध्यान दिया जाए, तो ऐसी नीयत के साथ घरों को सजाना और रमज़ान कैलेंडर बनाना कदापि उचित नहीं।

अतः निष्कर्ष यह है कि यदि इस कार्य से घर के सदस्यों में कोई पवित्र परिवर्तन उत्पन्न हो रहा हो और उनमें रमज़ान की बरकतों की ओर ध्यान उत्पन्न होकर उनसे लाभ उठाने का अवसर मिल रहा हो, तो ऐसी सजावट और कैलेंडर बनाना उचित है। किंतु यदि केवल दिखावा करना और रमज़ान को बोझ समझकर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 10 Thursday 15 January 2026 Issue No. 3

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

बिताना उद्देश्य हो, तो ऐसी सजावट करना और ऐसे कैलेंडर बनाना नाजायज़ है और बिदअत के अंतर्गत आएगा।

सवाल: कनाडा से एक मित्र ने हज़रत अनवर ऐदहिल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की सेवा में लिखा कि गैर-मुसलमानों के सामने समलैंगिकता को गलत कैसे सिद्ध किया जाए। साथ ही यह कि ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए हम कहते हैं कि ब्रह्मांड को बनाने वाला कोई तो होगा क्योंकि कोई भी चीज़ अपने आप नहीं बन सकती। फिर सवाल उठता है कि स्वयं ईश्वर को किसने बनाया? हज़रत अनवर ऐदहिल्लाह तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ ने अपने 24 दिसंबर 2021 के पत्र में इन सवालों के निम्नलिखित उत्तर प्रदान किए। हज़रत अनवर ने कहा:

उत्तर: ईश्वर ने ब्रह्मांड की प्रत्येक वस्तु को किसी उद्देश्य के लिए बनाया है। इसीलिए कहा: "रब्बना मा ख़लक़ता हाज़ा बातिला" (सूरह आल-ए-इमरान: 191) अर्थात, "हे हमारे पालनहार! तूने यह (संसार) व्यर्थ नहीं बनाया।"

अतः विवाह के बाद पुरुष और स्त्री के आपसी संबंधों का भी एक उद्देश्य है, जो पवित्रता और सदाचार, स्वास्थ्य की सुरक्षा, मानव जाति की निरंतरता और प्रेम तथा शांति की प्राप्ति है।

अतः ईश्वर ने हमें शारीरिक अंग भी एक विशेष उद्देश्य के लिए प्रदान किए हैं। खाना खाने के लिए मुंह बनाया है। अब यदि कोई उसी मुंह के द्वारा गंदगी, कचरा और मिट्टी खाने लगे तो उसे बुद्धिमान तो नहीं कहा जा सकता।

हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि हवाई जहाज आदि उड़ाने के लिए एविएशन के सिद्धांत और नियम बने हुए हैं और वाहन चलाने के लिए यातायात के कानून मौजूद हैं। अब यह तो नहीं हो सकता कि कोई व्यक्ति बिना सोचे-समझे और बिना किसी कानून का पालन किए जहाज उड़ाने का प्रयास करे या उसे सड़कों पर दौड़ाने लगे। इसी प्रकार कोई यातायात के कानूनों का पालन किए बिना वाहन सड़क पर ले आए। फिर दुनिया के सभी देशों ने अपने-अपने देशों में आने-जाने के लिए आप्रवासन के कानून बनाए हुए हैं। क्या संभव है कि कोई व्यक्ति इन कानूनों का पालन किए बिना किसी भी देश में प्रवेश कर जाए। इसी प्रकार ईश्वर ने भी मनुष्य को जीवन व्यतीत करने के लिए कुछ कानूनों और सिद्धांतों तथा नियमों का पाबंद बनाया है। यदि मनुष्य इन कानूनों को तोड़ेगा तो वह निश्चित रूप से ईश्वर की नाराजगी का कारण होगा।

चूंकि समलैंगिकता प्रकृति के नियम के विरुद्ध है, इसलिए इसके परिणामस्वरूप बुराइयाँ और बीमारियाँ फैलती हैं और यह सिद्ध बात है कि समलैंगिक लोग एड्स आदि बीमारियों का अधिक शिकार होते हैं।

हम देखते हैं कि जानवर भी अपनी नस्ल की निरंतरता के लिए अपने जोड़े के साथ ही यौन संबंध स्थापित करते हैं। इसके विपरीत मनुष्य, जिसे ईश्वर ने सृषि की श्रेष्ठतम रचना कहकर संपूर्ण संसार की सृषियों पर एक विशेषता प्रदान की है, यदि वह किसी ऐसे तरीके से अपनी यौन भावनाओं की अभिव्यक्ति करे जिसका कोई उद्देश्य न हो और जो कार्य उसकी नस्ल की निरंतरता का कारण भी न हो, तो फिर वह सृषि की श्रेष्ठतम रचना तो क्या, एक सामान्य मनुष्य बल्कि जानवरों से भी निचले दर्जे पर चला जाता है।

यदि मनुष्य बुद्धि से काम ले तो उसे समझ आ जाएगी कि ईश्वर ने यौन अंग भी विशेष उद्देश्य के लिए बनाए हैं। लेकिन समलैंगिकता के शिकार लोग केवल कामवासना के पीछे पड़े रहते हैं। फिर एक ओर वे इस बुराई में फंसे रहते हैं और दूसरी ओर उनकी यह इच्छा होती है कि उनकी अपनी संतान भी हो, जिसके लिए फिर वे दूसरों के बच्चों को गोद लेते हैं।

वास्तव में तो ये सभी दानवीय चालें हैं जिनके द्वारा दानव मनुष्य को उसके जन्म के वास्तविक उद्देश्य से दूर हटाने का प्रयास कर रहा है और वह इन शैतानी कार्यों के द्वारा एक सोचे-समझे षड्यंत्र के तहत मनुष्य को ईश्वर और धर्म से दूर करने की कोशिश कर रहा है ताकि किसी तरह मनुष्य का ईश्वर पर से विश्वास समाप्त हो जाए। समलैंगिकता न तो कोई शारीरिक बीमारी है और न ही यह जन्मजात रूप से किसी मनुष्य में दी गई है। इस बुराई के शिकार लोगों में से अधिकांश को बचपन में गलत प्रकार की फिल्में आदि देखकर यह गंदी आदत पड़ जाती है और कुछ को समाज भी बिगाड़ रहा होता है। इसी प्रकार जब स्कूलों में ऐसे विषय पढ़ाए जाते हैं तो इससे बच्चों और युवाओं में अधिक हताशा पैदा होती है और कुछ बच्चे एवं युवा इस बुराई में फंस जाते हैं।

हम ऐसे लोगों को बुरा नहीं समझते, लेकिन यह कार्य, जिसे ईश्वर ने बुरा कहा है, वह निस्संदेह बुरा है और इस कारण से ईश्वर ने एक समुदाय को दंड भी दिया था। यह तो नहीं हो सकता कि ईश्वर ने आज से हजारों वर्ष पहले एक समुदाय को इस बुराई के कारण दंड दिया हो लेकिन आजकल लोग वही बुराई करें तो ईश्वर उन्हें दंड न दे। ईश्वर की पकड़ के विभिन्न तरीके हैं। इसीलिए ईश्वर ने स्वयं ही इस मामले में दंड भी दिया था। अब भी ईश्वर स्वयं ही निर्णय करेगा कि ऐसे लोगों का क्या करना है। लेकिन हमारी सहानुभूति की माँग यह है कि हम उन लोगों को इन बुरे कार्यों में फंसने से बचाएँ क्योंकि हम धार्मिक दृष्टि से इस चीज को बुरा मानते हैं।

आपके दूसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि जब हम यह कहते हैं कि प्रत्येक वस्तु को किसी न किसी सत्ता ने बनाया है और विज्ञान भी इस बात को मानता है कि ब्रह्मांड की कोई भी वस्तु अपने आप नहीं है। इस सिद्धांत पर गौर कर लिया जाए तो बात समझ में आ जाएगी। अतः इस प्रकार ऊपर की ओर बढ़ते हुए कि 'इसे किसने बनाया' और 'उसे किसने बनाया', जहाँ जाकर बात रुकेगी वही ईश्वर की सत्ता है। विज्ञान इसे 'प्रकृति' कहता है और हम ईश्वर और उसके पैगंबरों द्वारा बताई गई शिक्षाओं के अनुसार इस सत्ता को ईश्वर की सत्ता मानते हैं।

शेष रहा ईश्वर की असीम सत्ता, जो मानवीय सीमित ज्ञान से बहुत ऊपर और श्रेष्ठ है, उसके विषय में हमारी वही मान्यता है जो पवित्र कुरआन ने हमें प्रदान की है कि: "कहो, वह अल्लाह एक है। अल्लाह बे-नियाज है। न उसने किसी को जना है और न वह जन्मा है। और उसका कोई समकक्ष नहीं है।" (सूरह अल-इख़्लास) हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) फरमाते हैं: ईश्वर अपनी सत्ता, गुणों और महिमा में एक है, उसका कोई साझी नहीं है। सभी उसके मुहताज हैं। कण-कण उससे जीवन पाता है। वह सभी वस्तुओं के लिए अनुग्रह का स्रोत है और वह स्वयं किसी से अनुग्रह प्राप्त नहीं करता। वह न किसी का पुत्र है और न किसी का पिता, और कैसे हो सकता है क्योंकि उसका कोई समान नहीं है। (इस्लामी उसूल की फिलासफी, रूहानी खज़ाइन खंड 10, पृष्ठ 417) हज़रत (मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) फरमाते हैं: तुम्हारा ईश्वर वह ईश्वर है जो अपनी सत्ता और गुणों में अद्वितीय है। न कोई सत्ता उसकी सत्ता के समान अनादि और अनंत है और न किसी वस्तु के गुण उसके गुणों के समान हैं। मनुष्य का ज्ञान किसी शिक्षक का मुहताज है और फिर सीमित है, किंतु उसका (ईश्वर का) ज्ञान किसी शिक्षक का मुहताज नहीं है और इस सबके बावजूद असीम है। मनुष्य की सुनने की शक्ति हवा की मुहताज है और सीमित है, किंतु ईश्वर की सुनने की शक्ति अपनी स्वाभाविक शक्ति से है और सीमित नहीं है। और मनुष्य की देखने की शक्ति सूर्य या किसी अन्य प्रकाश की मुहताज है और फिर सीमित है, किंतु ईश्वर की देखने की शक्ति अपने स्वाभाविक प्रकाश से है और असीम है। ऐसा ही मनुष्य की रचना करने की शक्ति किसी पदार्थ की मुहताज है और साथ ही समय की मुहताज है और फिर सीमित है, किंतु ईश्वर की रचना करने की शक्ति न किसी पदार्थ की मुहताज है, न किसी समय की मुहताज और असीम है, क्योंकि उसके सभी गुण अतुलनीय और बेजोड़ हैं और जैसे कि उसका कोई समान नहीं है, उसके गुणों का भी कोई समान नहीं है। (लेक्चर लाहौर, रूहानी खज़ाइन खंड 20, पृष्ठ 154-155)

मूर्तिपूजा की संभावना पैदा न हो। इसीलिए हज़रत मसलेह मौऊद (रज़ी अल्लाहु अन्हु) ने तफ्सीर-ए-कबीर में, जहाँ विभिन्न नमाज़ों का विवरण बताया है, वहाँ नमाज़-ए-जनाजा का विवरण बताते हुए कहा है: इन नमाज़ों के अलावा एक आवश्यक नमाज़ जनाजे की नमाज़ है। यह सामूहिक रूप से अनिवार्य (फर्ज़-ए-किफाया) है... जनाजे की नमाज़ में दूसरी नमाज़ों के विपरीत रुकू और सजदा नहीं होता, बल्कि इसके सभी भाग खड़े-खड़े अदा किए जाते हैं... इस नमाज़ के चार भाग होते हैं। इमाम किबला की ओर मुंह करके खड़ा होता है और ऊँची आवाज़ से सीने पर हाथ बांधकर तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहकर इस नमाज़ को शुरू करता है। इस नमाज़ से पहले इकामत (प्रार्थना के लिए खड़े होने का ऐलान) नहीं कही जाती।

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad